



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

“
परख

काच तणा देखी मिणकला,
अण समझा हो जाणे रतन अमोल।
ते निजर पड्यो सराफरी,
कर दीधो हो त्यारो कोड्यां मोल

काच के मनकों को देखा और रतन को न
परखने वाले ने जान लिया- ये अमूल्य
रतन हैं। सराफ ने देखा और उनका कोई
जितना मूल्य हो गया।

- आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली / वर्ष 27 • अंक 11 • 15 दिसंबर - 21 दिसंबर, 2025



प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 13-12-2025 • पेज 20 / ₹ 10 रुपये

रेशमी किरणें बिछी है कंटालिया के नंदनवन में, तेज-दीप सा सूरज दमक्यो, आर्यवर महाश्रमण पहुंचा आँगन में।



हर कार्य को पूरी एकाग्रता से करना भी एक प्रकार का ध्यान है : आचार्यश्री महाश्रमण

खिवाड़।

08 दिसंबर, 2025

राजस्थान के मारवाड़ संभाग के पाली जिले को पावन बनाने के लिए गतिमान जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता, तीर्थंकर के प्रतिनिधि, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण ने सोमवार को प्रातःकाल की मंगल बेला में मगरतालाब से प्रस्थान किया और पधारे। मार्ग में एक स्थान पर श्रीराम चौक से खिंवाड़ कृषि मंडी की ओर जाने वाले मार्ग का नामकरण 'आचार्य श्री महाश्रमण' मार्ग किया गया। आचार्य श्री ने वहां पधार कर मंगल पाठ का उच्चारण किया और भव्य जुलूस के साथ तेरापंथ भवन पधारे।

यहां बने 'महावीर भिक्षु समवसरण' में आयोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में आर्हत वाड.मय के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए आचार्य श्री महाश्रमण ने कहा कि ध्यान दुनिया में प्रसिद्ध है। अनेक नामों से ध्यान, योग पद्धतियां चल रही हैं और अनेकानेक



लोग ध्यान शिविरों में भाग लेते हैं अथवा ऑनलाइन कक्षाएं भी अटैण्ड करते हैं। ध्यान का हमारे जीवन में बड़ा महत्त्व है उसी प्रकार साधु धर्म में ध्यान का महत्त्व होता है। चित्र की एकाग्रता होती है और मन की अनपेक्षित चंचलता नहीं होती है तो कार्य अच्छा संपन्न हो सकता है।

विद्यार्थी विद्यालयों में पढ़ते हैं तो उनके भी पढ़ाई में अच्छी एकाग्रता होगी तो परिणाम अच्छा मिल सकेगा। प्रत्येक कार्य में ध्यान रखना अच्छा होता है। 'ध्यान' शब्द हमारे व्यवहार में भी प्रचुरता से प्रयुक्त होता है। शरीर की स्थिरता, वाणी का संयम और मन

की एकाग्रता या निर्विन्वारता, ये तीनों स्थितियां एक साथ हैं तो वह बहुत अच्छा ध्यान हो जाता है। चलने में, भोजन करते समय, पढ़ाई-लिखाई के समय यदि भाव क्रिया होती है तो वह कुछ अंशों में एक प्रकार का ध्यान हो जाता है। पूज्य गुरुदेव ने विद्यार्थियों को

ध्यान का प्रयोग भी करवाया।

हमारे धर्म संघ में नवम् आचार्य, आचार्य श्री तुलसी के समय ध्यान पद्धति प्रेक्षा ध्यान के नाम से शुरू हुई थी। आदमी आपने जीवन में ध्यान का अभ्यास करें। कार्यकरते समय भी ध्यान रहे, श्वास आदि का प्रयोग करें और जीवन में प्रत्येक कार्य को ध्यान से जोड़ने का प्रयास करना चाहिए। जो भी कार्य करें पूरी एकाग्रता उसी में रखने का प्रयास होना चाहिए।

आचार्य श्री के स्वागत में खिंवाड़ा तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री महेन्द्र खांटेड़ का निवर्तमान अध्यक्ष श्री अमृतलाल खांटेड़ ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल खिंवाड़ा ने स्वागत गीत का संगान किया। पाली के पूर्व विधायक श्री ज्ञानचंद पारख ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

सरपंच श्रीपाल वैष्णव, एसडीएम श्रीमती शिवाश जोशी, व्यापार मंडल अध्यक्ष श्री कांति सुथार, श्री महेन्द्र बोहरा आदि ने आचार्य श्री के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों से हो सकता है मानव जीवन का कल्याण : आचार्यश्री महाश्रमण

मगलतालाब।

07 दिसंबर, 2025

मेवाड़ धरा को पावन करने के पश्चात् मारवाड़ की धरा को आध्यात्मिकता से आपलावित करने और जन-जन के मानस को अध्यात्म की ज्ञान गंगा से अभिसिंचन प्रदान करने के लिए जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अखंड परिव्राजक, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी प्रातःकाल कोट सोलंकिमान से लगभग 7 किमी का मंगल विहार परिसंपन्न कर मगलतालाब में स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे।

विद्यालय परिसर में आयोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में आगम वांगमय के माध्यम से अपनी पावन देशना प्रदान करते हुए आचार्यश्री महाश्रमणजी ने कहा कि आदमी का जीवन धर्ममय बन जाए ऐसा प्रयास करना चाहिए। यद्यपि धर्मस्थान अलग-अलग भौतिक रूप में भी होते हैं कहीं मंदिर, कहीं

जैन स्थानक, उपाश्रय, तेरापंथ भवन, चर्च आदि। धर्माराधना, धर्मसाधना, प्रवचन आदि के लिए इन धर्मस्थानों की उपयोगिता भी होती है। धर्मस्थान होने से लोगों को इकट्ठा होने का एक सार्वजनिक केन्द्र मिल जाता है। किसी के घर में जाने में भले ही कोई संकोच करे लेकिन धर्मस्थान तो सभी का होता है, वहां लोग सहर्ष उपस्थित हो सकते हैं और धर्माराधना करते हैं।

आदमी को यह प्रयास करना चाहिए कि हमारा जीवन भी धर्मस्थान बन जाए। जीवन में धर्म आ जाए, जीवन के व्यवहार में धर्म जुड़ जाए, कर्म के साथ धर्म भी जुड़ जाए तो आदमी जहां भी जाएगा धर्म और धर्मस्थान उसके साथ रहेंगे। ऐसा व्यवहार जो महान व्यक्तियों ने किया है और जो पवित्र है, उस व्यवहार को आचरित करने वाला व्यक्ति गहां को प्राप्त नहीं होता है। अतः जीवन व्यवहार में धर्म आए। परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया और उसे बढ़ाया। अणुव्रत ऐसा



धर्म है जो जीवन के व्यवहार में रखा जा सकता है। आदमी कहीं भी जाए, कभी भी जाए, किसी भी व्यवसाय में रहे उसके प्रत्येक व्यवहार के साथ जुड़ा रह सकता है। अणुव्रत की चर्चा आम जनता के बीच कहीं भी हो सकती है। अणुव्रत जीवन व्यवहार से जुड़ा हुआ धर्म है यह धर्म स्थान से जुड़ा न होकर कर्म स्थान से जुड़ा हुआ मानो धर्म है। अणुव्रत की बात धर्मस्थानों के बाहर भी हो सकती

है। इसके लिए आदमी के भीतर प्राणियों के प्रति दया की भावना हो, किसी भी जीव की अनावश्यक हिंसा का प्रयास नहीं करना चाहिए। प्रत्येक प्राणी मात्र के प्रति दया की भावना हो। आदमी को औचित्य का लंघन नहीं करना चाहिए। जहां तक संभव हो सके दूसरों के प्रति हित की भावना होनी चाहिए। आदमी को लक्ष्मी (धन) आदि का किसी भी प्रकार का अहंकार नहीं करना चाहिए। ज्ञान

होने पर भी मौन रखना, शक्ति होने पर भी क्षमाशीलता रखना साधु और अच्छे व्यक्तियों की संगति करने का प्रयास करना चाहिए। गुरु का आदर करना चाहिए। इस प्रकार अणुव्रत में भी जो छोटे-छोटे नियम हैं उनका पालन करने से आदमी का कल्याण हो सकता है।

आचार्य प्रवर ने साध्वी कुंदन रेखा जो अभी दिल्ली में हैं और साध्वी आनंद प्रभा जो अभी हिसार में प्रवासित हैं, आज उनके दीक्षा पर्याय के 50 वर्षों की परिसम्पन्नता पर साध्वीद्वय को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। आचार्यश्री ने आगे कहा कि अब मारवाड़ में काफी रहना है। यह भी आचार्यश्री भिक्षु स्वामी से संबद्ध है, यहां के लोगों में धार्मिक भावना बनी रहे।

आचार्यश्री के मंगल प्रवचन के उपरान्त साध्वी प्रमुखा विश्रुत विभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि चार प्रकार के अमृत बतलाए गए हैं उनमें एक मुख्य है साधु का दर्शन।

(शेष पेज 17 पर)

किसी पर झूठा कलंक लगाने का न करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

कोट सोलंकियान गांव।

06 दिसंबर, 2025

मेवाड़ की धरा को अपने चरणों से पावन बना कर आध्यात्मिकता की ज्ञान गंगा प्रवाहित करने वाले जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आज दिवेर गांव से मंगल प्रस्थान किया और लगभग सोलह किमी का विहार परिसम्पन्न कर पाली जिले के कोट सोलंकियान गांव में स्थित जैन धर्म के एक भवन में पधारे। मारवाड़ के श्रद्धालुओं और बड़ी संख्या में ग्रामीण जनों ने आचार्य प्रवर का भाव भीना स्वागत किया।

प्रातःकालीन मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में समुपस्थित श्रद्धालुओं को आगम वांग्मय के माध्यम से पावन देशना प्रदान करते हुए कहा कि जैन वांग्मय में अठारह पाप बतलाए गए हैं। उनमें एक पाप है- अभ्याख्यान, किसी पर झूठा आरोप लगा देना, बात में सच्चाई हो और फिर आरोप लगाएं तो यह कोई बुरी बात



नहीं है। अपना अधिकार प्राप्त करने के लिए न्यायालय में भी जाया जा सकता है क्योंकि आप गृहस्थ हैं और समाज, परिवार की भूमिका में हैं। जो आदमी झूठा आरोप लगाता है, हो सकता है कि आगे के जन्मों में उसे भी झूठा आरोप झेलना पड़ जाए। अतः हमारे जीवन में

हमें किसी पर भी झूठा कलंक लगाने का प्रयास नहीं करना चाहिए।

आदमी को न अपने लिए न दूसरों के लिए, क्रोधवश, द्वेषवश, भयवश, झूठ नहीं बोलना चाहिए, जिससे किसी की हिंसा हो जाए, किसी को तकलीफ में पड़ना पड़े। साधु के तो तीन करण

तीन योग से झूठ बोलने का त्याग होता है। अठारह पापों का सेवन साधु जीवन भर नहीं करता है। इस दृष्टि से साधु का जीवन बहुत उजला होता है। यद्यपि साधु से भी प्रमाद वश भूल हो सकती है। साधु का जीवन मिलना बहुत बड़ी बात होती है।

आचार्य प्रवर ने आगे कहा कि कल पौष कृष्ण तीज है और इस दिन साध्वी कुन्दन रेखाजी व साध्वी आनंद प्रभाजी की दीक्षा के पचास वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं। आगामी 9 दिसम्बर को गुरुदेव तुलसी की दीक्षा के एक सौ वर्ष पूर्ण हो जाएंगे। दोनों साध्वियों की दीक्षा के पचास वर्ष पूर्ण होने के पश्चात् आगम स्वाध्याय आदि जितना संभव हो सके, करने का प्रयास करें। कंठस्थ ज्ञान का चितारणा करें और चितारने के साथ-साथ अर्थ का भी चिंतन होता रहे। संयम में समिति, गुप्ति और महाव्रतों के प्रति जागरूकता रहे। संघ सेवा की भावना रहे।

आचार्यश्री के मंगल प्रवचन के उपरान्त साध्वी प्रमुखा विश्रुत विभाजी ने समुपस्थित जनता को संबोधित किया। कोट सोलंकियान की ओर से श्री कुंदनमल कोठारी व श्री अमृतलाल गिड़िया ने अपनी भावभाविकता दी। गिड़िया परिवार की महिलाओं तथा जैन संघ की महिलाओं ने पृथक-पृथक स्वागत गीत का संगान किया। बालक आरव और मेहुल ने अपनी बाल सुलभ प्रस्तुति दी।

आदमी पद या कद से नहीं अपितु सद्गुणों से बड़ा बनता है : आचार्यश्री महाश्रमण

लाम्बोड़ी।

04 दिसंबर, 2025

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ के एकादशमाधिशास्ता, अखण्ड परिव्राजक, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी आज प्रातः 'धानिन' से अपनी धवल सेना के साथ गतिमान हुए और लगभग 9 किमी. का विहार संपन्न कर लाम्बोड़ी गांव स्थित राजकीय उच्च माध्यम. विद्यालय में पधारे। बड़ी संख्या में उपस्थित श्रद्धालुओं और ग्रामीणजनों ने आचार्य का भावपूर्ण स्वागत किया।

विद्यालय परिसर में प्रातःकालीन मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में अर्हत् वाड. मय आधारित अमृत देशना प्रदान करते हुए आचार्य श्री महाश्रमण जी ने कहा कि मनुष्य जन्म को दुर्लभ बताया गया है। चौरासी लाख जीव योनियों में मानव जन्म मिलना मुश्किल और दुर्लभ बताया गया है। यह मानव जीवन वर्तमान में हमें उपलब्ध है। इस मानव जीवन में

जो आदमी धर्म करता है, अध्यात्म की साधना करता है उसके लिए यह जीवन धन्य हो जाता है, कृतार्थ हो जाता है और बड़ा लाभ इस जीवन से प्राप्त हो सकता है। इस मानव जीवन में भी जो आदमी हिंसा, चोरी, धोखाधड़ी आदि पाप कार्य करता है, व्यसनों में आसक्त रहता है उसको पुनः कब मानव जीवन मिले और उसका कब कल्याण हो, कहना कठिन है। मनुष्य के पास पांच इंद्रियां हैं और मस्तिष्क है।

मनुष्य इस शरीर से जो साधना कर सकता है, वह साधना कोई दूसरा प्राणी नहीं कर सकता। जो व्यक्ति साधु बन जाता है, परिग्रह को छोड़ देता है, हिंसा आदि आश्रमों का त्याग कर दिया वह इस दुनिया का बड़ा आदमी बन जाता है। राजनीति, समाज आदि संदर्भों में भी कोई आदमी बड़ा आदमी हो सकता है परन्तु जो सद्गुणों से बड़ा है यह महत्त्वपूर्ण बात होती है। व्यक्ति में नम्रता, क्षमाशीलता आरध्य के प्रति भक्ति होना और स्वभाव



अच्छा होना बड़े पन के लक्षण हैं। आज लाम्बोड़ी में साधु-साध्वियों और समणियों का संगम हुआ है, साथ में किसान सम्मेलन भी है।

किसान भी इंसान ही है। भारत एक कृषि प्रधान देश है किसानों में धन

के साथ-साथ जीवन में धर्म की भी धनाढ्यता भी होनी चाहिए। जीवन में अहिंसा, ईमानदारी रहे और नशामुक्ति रहे। शराब, बीड़ी-सिगरेट आदि का नशा न हो। किसान को अन्नदाता कहा जाता है। अन्न, पानी और सद्गुणों को रत्न

कहा गया है। अतः अन्न के महत्त्व को भी ध्यान में रखने का प्रयास करना चाहिए। आचार्य श्री ने चतुर्दशी के संदर्भ में हाजरी के क्रम को संपादित करते हुए चारित्रात्माओं में उपस्थित किसानों को पावन प्रेरणा करते हुए मदिरा पान का त्याग करवाया। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा को मंडल लाम्बोड़ी ने स्वागत गीत का संगान किया।

आचार्य प्रवर ने विद्यार्थियों को सद्भावना, नशामुक्ति व नैतिकता का संकल्प भी स्वीकार करवाया और मंगल संबोध प्रदान किया। स्थानीय विधायक श्री सुरेन्द्र सिंह राठौड़ ने कहा कि आचार्य श्री का शुभगमन होना बड़े सौभाग्य की बाता है। आप मेवाड़ क्षेत्र में चौदह वर्षों बाद राम के रूप में पधारे हैं, हम सभी अब्योध्या वासियों के रूप में आपका स्वागत करते हैं। कुछ समय पश्चात् सायंकाल आचार्य प्रवर रात्रिकालीन प्रवासा हेतु विहार कर कितेला गांव में पधारे।



संक्षिप्त खबर

सम्मान समारोह का आयोजन

उदयपुर। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के 59वे राष्ट्रीय अधिवेशन में तेरापंथ युवक परिषद उदयपुर को ऐतिहासिक रूप से 22 विभिन्न श्रेणियों में सम्मानित किया गया।

अहमदाबाद में आयोजित अभातेयुप राष्ट्रीय अधिवेशन में उदयपुर परिषद को भूपेश खमेसरा के अध्यक्षीय कार्यकाल सत्र 2024-25 का टीटीएफ सर्वश्रेष्ठ परिषद, टीटीएफ कैम्प, सरगम, नेत्रदान जागरूकता अभियान, चौका सत्कार, एमबीडीडी 24 कैम्प, एमबीडीडी 2145 यूनिट, एमबीडीडी सोशल मीडिया अवेयरनेस, भिक्षु विचार दर्शन कार्यशाला, अभ्यर्थना एक क्रांति भक्ति संध्या, जैन संस्कार विधि बेस्ट संस्कारक, एमबीडीडी और सरगम में विशेष सहयोग आदि विभिन्न श्रेणियों में सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उदयपुर परिषद से अभातेयुप प्रतिनिधि देव चावत, राजीव सुराणा, अभिषेक पोखरना, संदीप हिंगड, अजित छाजेड, तेयुप पूर्व सदस्य विनोद मांडोट, प्रबंध मंडल से अशोक चोरडिया, भूपेश खमेसरा, साजन मांडोट, विनीत फूलफगर, संदीप कोठारी, अविनाश बुलिया, पंकज भंडारी उपस्थित रहे।

सेवा, संस्कार पुरस्कार 2025

साहुकारपेट, चेन्नई। तेरापंथ सभा, चेन्नई द्वारा प्रतिवर्ष दिये जाने वाले 'चन्दादेवी डागा प्रेक्षा, सेवा, संस्कार पुरस्कार 2025 इस वर्ष सभा पुर्वाध्यक्ष श्री विमल चिप्पड़ को प्रदत्त किया जायेगा। चिप्पड़ की संघ, समाज, संगठन को दी गई सेवाओं का मूल्यांकन करते हुए पुरस्कार समिति संयोजक श्री उगमराज सांड ने साध्वी श्री उदितयशाजी के सान्निध्य में घोषणा की। चिप्पड़ तेरापंथ सभा के अध्यक्ष, साहुकारपेट ट्रस्ट के निवर्तमान प्रबन्धन्यासी, तेरापंथ महासभा आंचलिक प्रभारी, अमृतवाणी उपाध्यक्ष, जैन विश्व भारती परामर्शक, जैन महासंघ उपाध्यक्ष के साथ अनेकों जगह अपनी सेवाएँ प्रदान की, कर रहे हैं। आपको आगामी चार जनवरी को तेरापंथ सभा द्वारा समायोजित वृहद अमृत जयंती महोत्सव कार्यक्रम में यह पुरस्कार प्रदान किया जायेगा।

नव वर्ष महामंगल पाठ का कार्यक्रम

गुवाहाटी। आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रबुद्ध सुशिष्य मुनि डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार जी, मुनि रमेश कुमार जी, मुनि पद्म कुमार जी, मुनि रत्न कुमार जी के पावन सान्निध्य में दीपावली एवं नव वर्ष महामंगल पाठ का विशेष कार्यक्रम तेरापंथ धर्मस्थल में संपन्न हुआ। सर्वप्रथम भक्तामर स्तोत्र एवं महावीर अष्टकम् का पाठ श्रद्धा एवं भक्ति के साथ सभी ने एक स्वर से किया। विविध मंत्रों के पाठ से उपासना कक्ष गुंजायमान हो उठा। उपस्थित संपूर्ण श्रावक समाज तन्मय होकर मंगल पाठ श्रवण कर रहा था। मुनि डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार, मुनि रमेश कुमार का मंगल उद्बोधन हुआ।

आध्यात्मिक मिलन समारोह

गुड़ियात्तम। मुनि रश्मि कुमारजी का ऐतिहासिक मंगल चातुर्मास सफलता के बाद चेन्नई में विचरण करते हुए चेन्नई के किलपाँक क्षेत्र में मंगलमय और प्रेरणादायी आध्यात्मिक मिलन हुआ। मुनि रश्मि कुमार जी-ठाणा-2, एवं साध्वी उदितयशा जी ठाणा-4 का यह पावन मिलन श्रावक समाज के लिए सौभाग्य का अवसर बना। दोनों वंदनीय संतों के आगमन से वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से भर गया। श्रावक समाज ने विनम्रता एवं श्रद्धा के साथ संतों का स्वागत किया। धर्म चर्चा, मंगल प्रवचन एवं सौहार्दपूर्ण संवाद के माध्यम से यह मिलन और अधिक सार्थक बन गया। चेन्नई और गुड़ियात्तम के श्रावक समाज ने इस अवसर को एक आध्यात्मिक उत्सव के रूप में मनाया और संतों से आशीर्वचन प्राप्त किए। इस पावन मिलन से साधना, शांति और धर्मप्रेम की भावना को नई प्रेरणा मिली।

संतों का मिलन उल्लासदायक

साहुकारपेट चेन्नई।

चेन्नई के साहुकारपेट स्थित तेरापंथ भवन में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी के शिष्य मुनि रश्मि कुमार जी ठाणा -2, मुनि दीप कुमार जी ठाणा -2 का आध्यात्मिक मिलन हुआ। मुनि रश्मि कुमारजी ने कहा -संतों का मिलन उल्लासदायक होता है।

मुनि दीप कुमार जी से तीसरी बार मिलना हो रहा है। ये सेवा भावी है, मृदुभाषी है, सहनशील है और श्रमशील है। मुनि प्रियांशु मेरे बहुत बड़े सहयोगी है। मुनि काव्य कुमार जी भी अच्छे वक्ता है, श्रम करते हैं।

चेन्नई दक्षिण का पुराना श्रद्धा का क्षेत्र है। मुनिश्री ने चेन्नई श्रावक समाज

से अगले वर्ष लाडनू में होने जा रहे योगक्षेम वर्ष में सेवा हेतु प्रेरित किया। मुनि दीप कुमार जी ने कहा- संतों का यह मिलन प्रेरणादाई है। भाग्य से ऐसे अवसर प्राप्त होते हैं। हम सौभाग्यशाली हैं जो जिन शासन प्राप्त हुआ उसमें तेरापंथ जैसा धर्म संघ मिला जहां एक सुगुरु का साया है।

वर्तमान में आचार्य श्री महाश्रमण जी की छत्रछाया में साधना कर रहे हैं। मुनि श्री रश्मि कुमार जी के आज दर्शन हुए हैं।

मुनि श्री पुरुषार्थी हैं, मधुर गायक हैं, मंत्रविद हैं, और सेवा भावी हैं। गुड़ियात्तम का ऐतिहासिक चातुर्मास कर चेन्नई पधारे हैं। मुनि प्रियांशुजी सेवाभावी हैं। मेरे सहयोगी मुनि काव्य

मेहनती हैं। मुनिश्री ने आगे कहा- चेन्नई श्रद्धालु क्षेत्र है। चेन्नई के श्रावक समाज को साधु - संतों के बिना चैन नहीं मिलता। मुनि प्रियांशु कुमार जी एवं मुनि काव्य कुमार जी ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में स्वागत गीत तेरापंथ महिला मंडल की महिलाओं ने गाया। स्वागत भाषण तेरापंथ सभा भवन ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष मंगलचंद जी डूंगरवाल, तेरापंथी सभा चेन्नई के उपाध्यक्ष प्रवीण जी बाबेल , तेयूप चेन्नई उपाध्यक्ष हरीश भंडारी, अणुव्रत समिति उपाध्यक्ष स्वरूपचंद दांती ने दिया।

विजयनगर बेंगलुरु के सभा अध्यक्ष मंगलचंद जी कोचर ने भी विचार रखे। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि काव्य कुमार ने किया।

महामांगलिक अनुष्ठान का आयोजन

सिकंदराबाद।

तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद द्वारा महामांगलिक अनुष्ठान भगवान महावीर निर्वाण दिवस, दीपावली एवं नववर्ष के शुभ अवसर पर मंगलकारक-विघ्ननिवारक-सिद्धिप्रदायक महामांगलिक अनुष्ठान का आयोजन युगप्रधान महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी की विदुषी सुशिष्या साध्वी डॉ गवेषणाजीश्री जी ठाणा -4 के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, डी वी कॉलोनी, सिकंदराबाद में हुआ।

सिकंदराबाद सभा अध्यक्ष श्री सुशील जी संचेती ने सभी संस्थाओं की तरफ से आए श्रावक श्राविकाओं का स्वागत किया एवं दीपावली एवं नव वर्ष की शुभकामनाएं प्रेषित की।

साध्वी डा. गवेषणाश्री ने कहा- मनुष्य सदा अपने आपको बचाने का

प्रयास करता है, विघ्न बाधाओं के निवारण का उपाय खोजता है। वह अपने पौरुष और श्रम को तभी सार्थक और सफल मानता है जब उसका प्रारब्ध कार्य निष्पत्ति तक पहुंच जाता है।

अभीष्ट सिद्धि के लिए बृहद् मंगलपाठ एक मंत्र भी है और शुभकार्य के लिए या भविष्य के लिए की जानेवाली मंगलकामना का भी द्योतक बनें।

आज का पहला दिन ही नहीं हर क्षण, हर समय, हर महीना, हर वर्ष हमारे नैतिक कार्यों से शुभ एवं मंगलमय बना रहे।

साध्वी मंयकप्रभा ने कहा- संस्कृत का एक सुन्दर सुक्त है- बिना प्रयोजन के मन्द व्यक्ति भी किसी कार्य में प्रवृत्त नहीं होता। तो बुद्धिमान कहलानेवाला व्यक्ति अकारण उसमें क्यों प्रवृत्त होगा। यह सच्चाई है प्रत्येक कार्य के साथ व्यक्ति की अपनी एक कामना जुड़ी हुई है। हर

व्यक्ति में मन में चाह है कि हमारा यह वर्ष आनंदमय, मंगलमय, बीते।

इस भावना के पीछे मंत्रों की भी अपनी बहुत बड़ी भूमिका रहती है। साध्वी मेरुप्रभा जी ने कहा- आज का दिन समीक्षा का है। वर्ष भर में हमने क्या पाया गया खोया उसका चिंतन करना है। जो अवशेष है उसे पूर्णता का संकल्प देना है।

पुराणा कैलेण्डर उतारकर नया कैलेण्डर टांग देना ही नया वर्ष का प्रवेश नहीं है। कुछ अतीत का सिंहावलोकन व भविष्य की परिकल्पना का नाम ही नया वर्ष है।

साध्वी श्री दक्षप्रभा जी ने गीतिका के माध्यम से नव वर्ष की शुभकामनाएं प्रेषित की। कार्यक्रम में सभी संस्था के पदाधिकारीगण मौजूद थे। आभार ज्ञापन सिकंदराबाद सभा मंत्री हेमंत जी संचेती ने किया।

व्यक्ति आलस्य छोड़ धर्म लाभ लें

नोखा।

देशनोक चातुर्मास सम्पन्न कर पधारे डा. मुनि अमृत कुमार जी का नोखा पदार्पण पर तेरापंथ भवन में अभिनंदन किया गया। तेरापंथ महिला मण्डल द्वारा स्वागत गीत का संगान किया। नोखा पारख परिवार से दीक्षित मुनि उपशम कुमार जी ने अल्प समय में अधिक धर्म लाभ लेने की प्रेरणा दी। डा. मुनि अमृत

कुमार जी ने कहा साधु चातुर्मास के बाद विचरण करें। गांव-गांव में लोगों को धर्म ध्यान उपासना की प्रेरणा दें। व्यसन मुक्त एवं शान्ति का जीवन जीएं।

तेरापंथ भवन पधारने पर 'शासन गौरव' साध्वी राजीमती जी आदि साध्वियों और मुनिद्वय का आध्यात्मिक मिलन आल्हादकारी आस्था निष्ठा समर्पण का अनूठा दृश्य रहा। तेरापंथ सभाध्यक्ष शुभकरण चौरडिया, मंत्री

मनोज घीया, कवि इन्द्रचन्द बैद, तेयुप अध्यक्ष निर्मल चौपड़ा, महिला मण्डल अध्यक्ष प्रीति मरोठी सभी ने स्वागत करते हुए नोखा में अधिक से अधिक विराजने की विनती की। इन्द्रचन्द बैद ने बताया कि फिलहाल मुनि द्वय मालू चौक भूरा भवन में विराज रहे हैं। रास्ते की सेवा में हंसराज भूरा, मनोज घीया, राजेन्द्र मालू, निर्मल चौपड़ा रहे। कुशल संचालन सुशील भूरा ने किया।

भक्तामर स्तोत्र का सुंदर और सफलतम आयोजन

दुबई।

आचार्य श्री महाश्रमण जी की विदुषी शिष्याएँ डॉ. समणी मंजु प्रज्ञा जी और समणी स्वर्ण प्रज्ञा जी के सान्निध्य में तथा अजमान सभा के तत्वाधान में भक्तामर स्तोत्र का 4 दिन 3 रात (लगभग 85 घंटे का) सुंदर और सफलतम आयोजन संपन्न हुआ।

इस पावन अनुष्ठान में UAE, UK, भारत (कोलकाता) तथा अमेरिका से श्रावक-श्राविकाओं ने श्रद्धा, निष्ठा और परिश्रम से भाग लिया। भारत के कोलकाता से उपासक डॉ. प्रेमलता चोरड़िया ने अपनी आध्यात्मिक उपस्थिति से आयोजन को विशेष रूप से आलोकित किया। UK से स्मिता गुंजन ने भी अपनी सक्रिय भागीदारी से अनुष्ठान को सफल बनाया। अमेरिका से सभी सन्माननीय समणियों चैतन्य प्रज्ञा जी, समणी हिम प्रज्ञा जी, समणी समत्व प्रज्ञा जी, समणी अभय प्रज्ञा जी, समणी

आर्जव प्रज्ञा जी, समणी स्वाति प्रज्ञा जी का सान्निध्य एवं सहयोग इस अनुष्ठान को प्राप्त हुआ। इस अनुष्ठान को सफलतम बनाने में डॉ. समणी मंजु प्रज्ञा जी और समणी स्वर्ण प्रज्ञा जी का श्रम विशेष रूप से सराहनीय रहा। UAE से उपासक दिनेश कोठारी, पुष्पा कोठारी, राकेश पटावरी तथा दीप्ति पटावरी ने इस अनुष्ठान के आयोजन में विशेष सहयोग प्रदान किया। पूरे कार्यक्रम का वातावरण भक्तिभाव, साधना और सामूहिक एकता से परिपूर्ण रहा। भक्तामर के दिव्य स्वर गूंजते रहे और सबने मिलकर जैन धर्म की भक्ति-परंपरा को नई ऊँचाई दी।

जैन संघ के अध्यक्ष विपुल कोठारी के आमंत्रण पर दुबई सकल जैन संघ के सामने समणी जी का आशीर्चन और मंगल पाठ हुआ। उसमें लगभग 500 लोगों ने लाभ लिया। इस अनुष्ठान में डॉ. समता एवं मयंक, दीप्ति, सुमित, शुशीला, अंजु, शोभा आदि का विशेष योगदान मिला

नमस्कार महामंत्र की कार्यशाला

गुड़ियातम।

साध्वी सोमयशजी ठाणा-3 के पावन सान्निध्य में आज नमस्कार मंत्र की विशेष कार्यशाला अत्यंत श्रद्धा, अनुशासन और आध्यात्मिक ऊर्जा के साथ संपन्न हुई। साध्वीश्री के साथ उपस्थित साध्वी सरलयशजी तथा साध्वी ऋषि प्रभा जी ने कार्यशाला को और भी अधिक गरिमामय और प्रेरणादायी बनाया।

साध्वीश्री ने अपनी मधुर वाणी और गहन आध्यात्मिक अनुभव के माध्यम से उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को नमस्कार मंत्र की महत्ता, उसकी संवेदना और उसके सार्वकालिक प्रभाव के बारे में विस्तृत मार्गदर्शन प्रदान किया। कार्यशाला की शुरुआत मंगलाचरण और नमस्कार मंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुई, जिससे वातावरण में दिव्यता की अनुभूति फैल गई। साध्वी सोमयशजी ने मंत्र के प्रत्येक पद की अर्थव्यंजना, उसके आध्यात्मिक रहस्य और जीवन

में उसके उपयोगी आयामों को सरल एवं प्रभावशाली तरीके से समझाया। उन्होंने बताया कि यह मंत्र साधक के कर्मों का क्षय करता है और आत्मशुद्धि का मार्ग खोलता है। कार्यशाला में ध्यान, स्वाध्याय और अनुभूति आधारित अभ्यास भी शामिल रहे। साध्वीश्री ने उपस्थितजन को मंत्र ध्यान की व्यवहारिक विधि सिखाई—कैसे श्वास के साथ मंत्र का सामंजस्य बैठाया जाए, कैसे मन को एकाग्र कर आंतरिक शांति का अनुभव किया जाए। कई प्रतिभागियों ने इस दौरान गहन शांति, सकारात्मकता और ऊर्जा का अनुभव किया।

अंत में साध्वी सोमयशजी ने नवकार मंत्र को जीवन में नियमित रूप से अपनाने, प्रतिदिन कुछ क्षण ध्यान में बैठने और आत्मानुशासन को मजबूत करने का संदेश दिया। साध्वी ऋषि प्रभा जी ने नमस्कार महामंत्र के माध्यम से आध्यात्मिक सुरक्षा कवच कैसे बनाया जाए, इसका सुंदर और व्यवहारिक स्वरूप समझाया गया।

❖ हर व्यक्ति के मन में कुछ होने की कामना हो। इसके लिए कुछ अपेक्षा अनुसार कठोर जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। जीवन में प्रतिस्रोतगामिता रहे।

— आचार्य श्री महाश्रमण

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन

जैन विधि-अमूल्य निधि



नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

■ **जयपुर।** श्वेता - श्रेयांस बैंगानी के नव प्रतिष्ठान श्वेता ज्वैलर्स (जी 37-38, वृंदावन कॉम्प्लेक्स, सेंट्रल स्पाइन, विद्याधर नगर, जयपुर) का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि से ही संस्कारक राजेश धाड़ेवा, संस्कारक गौतम बरड़िया, प्रवीण जैन ने मंगल भावना पत्रक स्थापित करवाकर सम्पूर्ण प्रक्रिया को सम्पन्न करवाया।

■ **सूरत।** गंगाशहर निवासी सूरत प्रवासी मुस्कान रचित सिपानी के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि से संस्कारक धर्मचंद श्यामसुखा, गौतम वैदमूथा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया। कुछ दिनों पूर्व ही इनका पाणिग्रहण संस्कार भी जैन संस्कार विधि से संपादित करवाया गया।

सायरा निवासी सूरत प्रवासी राकेश कोठारी के सुपुत्र शाहील कोठरी व चतुर जी तलेसरा के सुपुत्र अविश तलेसरा के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष मालू, विनीत श्यामसुखा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

नूतन गृह प्रवेश

■ **उदयपुर।** बसंतीलाल चव्हाण परिवार का गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से वैनिस अपार्टमेंट, मीरा नगर, उदयपुर में करवाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत संस्कारक पंकज भंडारी एवं मनोज लोढ़ा द्वारा भगवान महावीर स्तुति के साथ जैन संस्कार विधि से नूतन गृह प्रवेश किया गया।

■ **पूर्वांचल कोलकाता।** उमैद बैद के नूतन गृह प्रवेश के मंगल कार्यक्रम को जैन संस्कारक विजय बरमेचा ने 53, ब्लॉक बी, 7th फ्लोर, लेकटाउन, कोलकाता में सम्पूर्ण विधि विधान द्वारा नमस्कार महामंत्र, मंगल-स्तोत्रों के उच्चारण के साथ परिवार जनों की उपस्थिति में संपादित किया।

संजय बैद के नूतन गृह प्रवेश के मंगल कार्यक्रम जैन संस्कारक विजय बरमेचा ने स्वास्तिक अपार्टमेंट, कालिंदी, जेसोर रोड, कोलकाता में सम्पूर्ण विधि विधान द्वारा नमस्कार महामंत्र, मंगल-स्तोत्रों के उच्चारण के साथ परिवार जनों की उपस्थिति में संपादित किया।

सुरेंद्र हीरावत के नूतन गृह प्रवेश के मंगल कार्यक्रम जैन संस्कारक विजय बरमेचा ने नेचुरल सिटी कंप्लेक्स, दक्षिण धारी, लेक टाउन, कोलकाता में सम्पूर्ण विधि विधान द्वारा नमस्कार महामंत्र, मंगल-स्तोत्रों के उच्चारण के साथ परिवार जनों की उपस्थिति में संपादित किया।

नामकरण संस्कार

■ **फरीदाबाद।** भूमिका- निखिल लूनिया निवासी श्री डूंगरगढ़, प्रवासी हावड़ा, कोलकाता की नवजात पुत्री, संजय लूनिया की पौत्री, संजय दुगड़ की दोहित्री का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि द्वारा म. स. 21, सैक्टर - 22, फरीदाबाद पर संपादित करवाया। जैन संस्कारक मुकेश जैन बोथरा, राजेश जैन ने मंगल मंत्रोच्चारण द्वारा विधि संपादित कराई।

■ **सूरत।** रासीसर निवासी सूरत प्रवासी मंजू देवी-लूणकरण जी लालानी के सुपौत्र व संगीता- जसकरण जी लालानी के सुपुत्र दीपक- मनीषा लालानी (स्थानकवासी सम्प्रदाय) के प्रांगण में कन्यारत्न का जन्म हुआ। जिसका नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक प्रकाश डाकलिया, अरविंद बाफना, विनीत श्यामसुखा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

■ **साउथ हावड़ा।** तारानगर निवासी साउथ हावड़ा प्रवासी उमैद-जयश्री राखेचा की सुपौत्री एवं प्रतीक - इतिसा राखेचा की सुपुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा के सहयोग से संस्कारक संजय कुमार पारख एवं ऋषभ सिपानी ने जैन मंत्रोच्चार द्वारा कार्यक्रम संपादित करवाया।

पाणिग्रहण संस्कार

■ **सूरत।** लाडनू निवासी सूरत प्रवासी वरिष्ठ संस्कारक विजयकान्त खटेड के सुपुत्र संकल्प जैन का शुभ पाणिग्रहण संस्कार सरदारशहर निवासी किशनगंज प्रवासी मन्नालाल बच्छावत की सुपुत्री अलीशा बच्छावत के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक धर्मचंद श्यामसुखा, सुशील गुलगुलिया, गौतम वैदमूथा, मनीष कुमार मालू, विनीत श्यामसुखा, नरेंद्र कुमार भंसाली, बजरंग बैद ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

उदयरामसर निवासी सूरत प्रवासी स्व.श्रीमान रंजीत कुमार जी सिपानी के सुपुत्र श्री रचित सिपानी (स्थानकवासी) का शुभ पाणिग्रहण संस्कार गंगाशहर निवासी श्रीमान सुनील कुमार पुगलिया की सुपुत्री सुश्री मुस्कान पुगलिया के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक श्री विजयकांत खटेड, श्री प्रकाश डाकलिया, श्री मनीष कुमार मालू, श्री विनीत श्यामसुखा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

वाव निवासी सूरत प्रवासी श्रीमान बिपिन भाई शाह के सुपुत्र श्री पुनीत भाई शाह का शुभ पाणिग्रहण संस्कार वाव निवासी श्रीमान सुरेश भाई मेहता की सुपुत्री सुश्री मैत्री मेहता के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक श्री विजयकांत खटेड, श्री मनीष कुमार मालू, श्री बजरंग बैद, श्री विनीत श्यामसुखा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।



गणाधिपति पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी के दीक्षा शताब्दी वर्ष की संपन्नता पर श्रद्धा प्रणति

आचार्य तुलसी : नेतृत्व का दिव्य आलोक और अणुव्रत का नैतिक पुनर्जागरण

● साध्वी डॉ. सरलयशा ●

आचार्य तुलसी भारतीय आध्यात्मिक परंपरा के उन अद्वितीय महापुरुषों में से एक थे, जिनकी दृष्टि समय के आर-पार जाती थी, जिनका चिंतन केवल धर्म-सीमाओं में बँधा न रहकर समस्त मानवता के हित की भूमि पर प्रतिष्ठित था। तेरापंथ के नवें आचार्य के रूप में उन्होंने सबसे दीर्घकालीन शासनकाल संभाला, पर इस शासनकाल की विशिष्टता वर्षों की संख्या में नहीं, बल्कि उन वर्षों में फैले अलौकिक नेतृत्व, चिंतन-वैभव, नैतिक पुनरुत्थान और चरित्र-क्रांति में थी। वे गुरु मात्र नहीं थे – वे एक वैचारिक युग थे, जो आने वाली पीढ़ियों के चिंतन में सदैव जीवित रहेगा। तुलसी ने धर्म को परंपरागत अनुष्ठानों की संकीर्णता से मुक्त करके उसे जीवन की सहज नैतिकता से जोड़ा। उन्होंने कहा – 'धर्म मनुष्य को मनुष्य के और निकट लाए, उसे दूर न करे।' इसी दर्शन के आलोक में उन्होंने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया, जिसने धर्म को जीवन के व्यवहार, चरित्र और कर्तव्य के धरातल पर उतारा।

आचार्य तुलसी का नेतृत्व

आचार्य तुलसी का नेतृत्व किसी धार्मिक सत्ता का नहीं था; वह आदर्शों का नेतृत्व था। मात्र 22 वर्ष की आयु में आचार्य पद स्वीकार करने वाले इस युवा साधु में ऐसी अंतर्दृष्टि, ऐसी संवेदना और ऐसा संतुलन था कि वह संपूर्ण तेरापंथी समाज को ही नहीं, बल्कि देश और विदेश में फैली मानवता को दिशा देने लगा। उनके नेतृत्व की मूल आधारशिलाएँ थीं –

(क) चरित्र और सत्यनिष्ठा : आचार्य तुलसी का विश्वास था कि नेतृत्व किसी पद से नहीं, चरित्र से जन्म लेता है। वे कहते थे – 'नेता वह नहीं जो भीड़ को चला ले; नेता वह है जो भीड़ में रहकर भी स्वयं को साध ले।' उनका जीवन इसी वाक्य का प्रमाण था। साधना, सत्य, त्याग और विनम्रता उनके व्यक्तित्व के स्वाभाविक अंग थे।

(ख) दूरदर्शिता : परंपरा को आधुनिकता के साथ जोड़ना। उनकी दृष्टि केवल वर्तमान तक सीमित नहीं थी; वह आने वाले समय का भी पूर्वानुमान कर लेती थी। धर्म को उन्होंने किसी बीते युग का बोझ नहीं बनने दिया। उन्होंने परंपरा का संरक्षण किया, परंतु उसे जड़ता नहीं बनने दिया। उनके अनुसार – 'धर्म जीवित तभी है जब वह काल के साथ संवाद करता रहे।'

(ग) संवाद, सहिष्णुता और मानव-केन्द्रित दृष्टि : आचार्य तुलसी जहाँ जाते, लोग केवल उपदेश सुनने नहीं आते थे; वे अपने भीतर की बेचैनी, द्वंद्व और भ्रम लेकर आते थे। तुलसी सुनते थे – धैर्य से, सहानुभूति से, और फिर समाधान

देते थे – सरलता, तर्क और विवेक के साथ। यही कारण था कि वे केवल गुरु नहीं रहे – वे लोक-धर्मगुरु बन गए।

चतुर्विध संघ का पुनर्जागरण

(क) साधु-साध्वी संघ का सुदृढीकरण : संघ में अनुशासन, अध्ययन और साधना के लिए उन्होंने नई व्यवस्थाएँ लागू कीं। साधुओं और साध्वियों में ज्ञान-विस्तार के लिए शिक्षण-केन्द्र स्थापित हुए। आचार्यश्री ने साधु-साध्वी परंपरा को केवल धार्मिक तपस्वियों का समूह नहीं रहने दिया; उन्हें चरित्र-निर्माण के दूत बना दिया।

(ख) श्रावक-श्राविका जीवन में नैतिक चेतना का संचार : श्रावकों और श्राविकाओं को उन्होंने मात्र दानकर्ता या धार्मिक अनुयायी नहीं माना; उनके अनुसार श्रावक समाज धर्म का सजीव विस्तार है। अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से उन्होंने श्रावक समाज को जीवन-व्यवहार में संयम, ईमानदारी, सत्य और अहिंसा को प्रतिष्ठित करने का आग्रह किया।

(ग) संगठन में आधुनिक प्रबंधन का समावेश : उन्होंने संघ को शास्त्र और व्यवस्था – दोनों की दृष्टि से सुव्यवस्थित किया। यात्राएँ, संयोजक मंडल, विविध समितियाँ और अध्ययन-प्रवचन की नियमितता – इन सबने संघ को एक जीवंत, सशक्त और विश्व-प्रभावी संगठन बना दिया।

अणुव्रत आंदोलन

आचार्य तुलसी का सर्वश्रेष्ठ योगदान है – अणुव्रत आंदोलन। यह आंदोलन केवल जैनों के लिए नहीं था; यह समस्त मानवता के लिए था। इसमें न जाति की दीवार थी, न संप्रदाय की; न महंगे अनुष्ठान थे, न कठिन नियम। अणुव्रत का मूल तत्व था – 'छोटे-छोटे व्रत, परंतु महान परिवर्तन।'

(क) अणुव्रत का सिद्धांत : छोटा व्रत, बड़ा प्रभाव। अणुव्रत आंदोलन की मूल प्रेरणा थी – छोटे-छोटे संकल्पों से मानस परिवर्तन हो, और बदले युग की धारा अणुव्रतों के द्वारा। यह केवल एक काव्य-पंक्ति नहीं, बल्कि आचार्य तुलसी के समस्त चिंतन की आधारभूमि थी। उन्होंने बताया कि मनुष्य पहले स्वयं को बदल ले – छोटे व्रतों, छोटे त्यागों और छोटे नियमों के माध्यम से – तो समाज स्वयं बदल जाएगा।

(ख) सामाजिक और राष्ट्रीय संदर्भ : जब अणुव्रत का उदय हुआ, तब देश जातीय संघर्षों, भ्रष्टाचार, हिंसा और सामाजिक विभाजन से त्रस्त था। ऐसे समय में आचार्य तुलसी ने कहा – 'धर्म यदि जीवन नहीं बदलता तो वह केवल पूजा का विषय है, प्रगति का नहीं।'

(ग) अणुव्रत की वैश्विकता : अणुव्रत ने धर्म को वैश्विक स्तर पर नई पहचान दी। आचार्य तुलसी ने कहा – 'हमारा उद्देश्य किसी को जैन बनाना नहीं; हमारा उद्देश्य है मनुष्य को श्रेष्ठ मनुष्य बनाना।' इसी कारण अणुव्रत विश्वभर में अध्ययन और चिंतन का विषय बना।

साहित्य, दर्शन और आध्यात्मिकता

आचार्य तुलसी केवल धर्मगुरु नहीं थे; वे गंभीर चिंतक, कवि, दार्शनिक और समाज-सुधारक भी थे। उनके साहित्य में तर्क की स्पष्टता, भाषा की सरलता और विचारों की गहराई विस्मयकारी रूप में दिखाई देती है। उनकी रचनाएँ केवल जैन धर्म की व्याख्या नहीं करतीं, बल्कि जीवन के शाश्वत प्रश्नों – कर्तव्य क्या है, सत्य क्या है, संयम क्या है, धर्म क्या है – का समाधान प्रस्तुत करती हैं।

चतुर्विध धर्मसंघ को गौरव-शिखर तक ले जाने वाला नेतृत्व

आचार्य तुलसी ने तेरापंथ धर्म संघ को न केवल बढ़ाया, बल्कि गौरव और वैश्विक सम्मान की ऐसी ऊँचाई पर पहुँचाया जो पहले संभव न थी। उन्होंने साधु-साध्वी परंपरा को तप और अध्ययन का आदर्श बनाया। श्रावक-श्राविका समुदाय को नैतिकता, भक्ति और सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ जोड़ा। प्रेक्षा-ध्यान, जीवन-विज्ञान, अणुव्रत और मानवीय एकता जैसे उपक्रमों ने संघ को विश्वभर में सम्मान दिलाया। उन्होंने तीर्थंकर महावीर की शिक्षाओं को आधुनिक काल के अनुरूप समझाया और स्थापित किया। शिक्षा, सेवा, नैतिकता और सार्वजनिक जीवन में तेरापंथी समाज एक अग्रणी समुदाय बन गया। आचार्य तुलसी के नेतृत्व में संघ केवल धार्मिक संरचना नहीं रहा – वह मानव-सेवा और नैतिक उत्थान का जीवंत केंद्र बन गया।

निष्कर्ष : एक ऐसे युगपुरुष, जिनके विचार समय को दिशा देते रहे

आचार्य तुलसी का जीवन सिखाता है कि धर्म पूजा से बड़ा है – आचरण है। नेतृत्व अधिकार नहीं – उत्तरदायित्व है। संयम कठोरता नहीं – स्वतंत्रता है। छोटे व्रत – बड़े परिवर्तन ला सकते हैं। मनुष्य की श्रेष्ठता उसके विचारों और कर्मों में बसती है, न कि उसके किसी धार्मिक नाम में। उन्होंने धर्म को मुक्त, सांसारिक, मानवीय और सार्वभौम बनाया। उन्होंने समाज को चरित्र-निर्माण का मार्ग दिया और अणुव्रत के माध्यम से यह संदेश दिया कि – 'इंसान पहले इंसान, फिर हिंदू या मुसलमान' उनका नेतृत्व, उनका चिंतन, उनका आदर्श और उनका अणुव्रत – सदियों तक मानवता को दिशा देता रहेगा। वे केवल तेरापंथ के आचार्य नहीं थे; वे मानव-मूल्यों के आचार्य थे।

मानवता के मसीहा आचार्य श्री तुलसी

● साध्वी डॉ. सरलयशा ●

उत्सव के मानिंद जीवन के हर पल को उमंग और आनंद से जीने वाले मानवता के मसीहा आचार्य श्री तुलसी। मात्र ग्यारह वर्ष की अल्पायु में वीतराग पथ पर आगे बढ़ने का दृढ़ निश्चय कर मुनि जीवन अंगीकार किया।

गुरु के विश्वास-पात्र, संयम जीवन में विनम्रता और जागरूकता से मुनि तुलसी ने बयोवृद्ध और ज्ञानवृद्ध के दिलों में स्थान बनाया। मात्र बाईस वर्ष की उम्र में तेरापंथ धर्मसंघ के यशस्वी आचार्य पद पर आसीन बने।

अद्भुत उद्गम – नेतृत्व की राहों पर गुरु के विश्वास को साबित किया। धर्मसंघ में विकास की नूतन रेखाएँ खींचीं। भगवान महावीर के शाश्वत सिद्धांतों को सुगम शैली में प्रस्तुत कर समण-श्रेणी के जरिए विश्वव्यापी विस्तार की पहल की।

जागृति का सिंहनाद – हर वर्ग को अपनी पारदर्शी सोच से सही भविष्य की राह दिखाई। नर-नारी के उद्धारक कहलाए। महिला वर्ग की प्रतिभा उजागर करने के लिए मंच दिया।

विकास की दिशा में गतिमान – अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल उसकी मिसाल है। युवा शक्ति समाज की रीढ़ है। आचार्य तुलसी भविष्य-द्रष्टा थे। वर्तमान में तेरापंथ युवक परिषद सेवा और संस्कार के मार्ग पर अपूर्व उद्गम भर रही है।

नैतिक उत्थान में योगदान – भारत की आजादी के साथ आचार्य तुलसी ने ऋषि परंपरा के दायित्व का निर्वहन करते हुए असली आजादी अपनाओ – अणुव्रत आंदोलन के नाम पर छोटे-छोटे नियमों का पैकेज दिया। लाखों लोगों ने अणुव्रत के नियमों को अपनाकर अपने जीवन की दिशा और दशा बदली है।

फौलादी साहस – मानव उत्थान हेतु आचार्य तुलसी ने अनगिनत अवदान दिए। शिक्षा के क्षेत्र में जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय उनकी ही देन है। हर कार्य को करीने से संपादित करने की अनूठी महारत उनमें प्राणवान थी। कड़ी से कड़ी कसौटी को भी उन्होंने समभाव से झेला। उनका स्लोगन था – 'जो हमारा हो विरोध, हम उसको समझें विनोद।'

'नसीब जिनके ऊँचे और मस्त होते हैं, इम्तिहान भी उनके जबरदस्त होते हैं।'

आचार्य श्री तुलसी ने अपने जीवन में अनगिनत कीर्तिमान गढ़े। उन्होंने तिश्नाणं तरियाणं सूत्र को चरितार्थ किया। उन्हें कई उपाधियों और अलंकरणों से नवाजा गया। एक समय ऐसा भी आया जब उन्होंने अपने आचार्य पद का विसर्जन भी कर दिया।

उनके विराट कृतित्व और व्यक्तित्व को शब्दों में बाँधना कठिन है। फिर भी आशा है कि महामना की संयम शताब्दी की दिव्यता का स्मरण जिज्ञासुओं के भीतर संयम-चेतना की प्रेरणा भरेगा।

गणाधिपति पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी के दीक्षा शताब्दी वर्ष की संपन्नता पर श्रद्धा प्रणति

तुलसीयानी, कामायनी से भी मधुर

● डॉ. समणी मंजु प्रज्ञा, समणी स्वर्णप्रज्ञा ●

(तुलसी : प्रकृति के दिव्य स्वरूप में)

स्व.जयशंकर प्रसाद ने कामायनी लिखकर महाकाव्य साहित्य को परिपुष्ट किया है। कामायनी मनु और ईड़ा की संघर्ष की कहानी है। संघर्षों से मिली हुई निष्पत्तियां कामायनी की सुन्दर कहानी है। आचार्य तुलसी का जीवन काव्य कामायनी की पवित्राओं से भी सुन्दर है। हमने कामायनी के तर्ज पर तुलसीयानी बनाकर यह प्रस्तुत किया है कि तुलसी का जीवन प्रकृति का सुन्दर रूप था।

प्रथम सर्ग :

सूर्यमेंतुलसी उषा की लालिमा मेंजब सूर्य उदित होता,
तब तुलसी के तेज का स्मरण दिलाता।
रश्मियों के सुनहरे जाल में बंधकर,
जगत को प्रकाशित करता निरंतर।
वैसे ही आचार्य तुलसी का तेज अपराजित,
अज्ञान के तिमिर को करता पराजित।
सप्तरंगी किरणों की भांति सप्त शिक्षा,
जीवन में भरती अमृत की दीक्षा।
जैसे सूर्य अस्त होकर भी नहीं मरता,
पूर्व में फिर नए तेज से उभरता।
वैसे ही तुलसी की कीर्ति अमर,
युगों-युगों तक चमकेगी निरंतर।

द्वितीय सर्ग:

चंद्रमा में तुलसी रजनी की रानी चंद्रमा जब आता,
शीतल किरणों से जग को नहलाता।
अमृत की धाराओं से सींचकर,
मन की तृष्णा को शांत करके।
षोडशकला से युक्त चंद्र का रूप,
षोडश संस्कारों से संपन्न तुलसी का स्वरूप।
कला-कला में छुपा है एक गुण निराला,
संस्कार-संस्कार में जीवन की मधुशाला।
अमावस्या में चांद जब छुप जाता,
फिर पूर्णिमा में पूरा दिखाता।
वैसे ही तुलसी गुप्त रूप में साधना करते,
प्रकट होकर जग का कल्याण करते।

तृतीय सर्ग :

पृथ्वी में तुलसी तुलसी की महानता भी धरती सी,
सबको गले लगाने वाली आरती सी।
जाति, धर्म, ऊंच-नीच का भेद नहीं,
सबके लिए खुला था हृदय, कोई छेद नहीं।
जैसे धरती बीज को अंकुरित करती,
वैसे ही तुलसी विचारों को फलित करती।
एक बीज से हजारों वृक्ष उगाकर,
वन बनाती जाती निरंतर।
गुरुत्वाकर्षण से धरती सबको बांधे रखती,
तुलसी भी प्रेम से सबको संस्कारित रखती।

चतुर्थ सर्ग :

समुद्र में तुलसी अगाध, अथाह, अपार महासागर,
लहरों का नृत्य करता निरंतर।
मोती छुपाए गहरे तल में,
रत्न बिखरे जल की कल में।

तुलसी का व्यक्तित्व भी सागर सा गंभीर,
ज्ञान की गहराई में छुपे अधीर।
सतह पर दिखती मधुर मुस्कान,
भीतर छुपा अनंत का ज्ञान।
ज्वार-भाटा आता रहता समुद्र में,
सुख-दुःख आते रहे तुलसी के जीवन में।
पर अडिग, अचल, शांत रहकर,
सबको दे देते थे प्रेम से भरकर।

पंचम सर्ग :

वायु में तुलसी तुलसी की शिक्षा भी वायु सी निर्मल,
जाति-पांति के बंधनों से विमल।
गरीब-अमीर, राजा-प्रजा के लिए समान,
सबको मिले आत्मा का ज्ञान।
हवा में घुली सुगंध की तरह,
फैले उनके विचार हर राह।
दिशा-विदिशा में पहुंचे संदेश,
हर कोने में फैला उपदेश।
तूफान में भी वायु नहीं रुकती,
बाधाओं से कभी नहीं झुकती।
वैसे ही तुलसी का संकल्प अटूट,
विरोधों में भी रहा अछूट।

षष्ठम सर्ग:

सुगंध में तुलसी फूलों की सुगंध हवा में घुल जाती,
दूर-दूर तक अपनी पहचान बनाती।
बिना किसी भेदभाव के सभी को मिलती,
मन में आनंद की तरंगें भरती।
तुलसी के गुणों की सुगंध भी ऐसी,
फैली चारों ओर मधुर सांस्कारिक रसी।
स्पर्श करती सबके हृदय को,
पवित्र बनाती जीवन की राह को।
चंदन, गुलाब, मोगरा, बेला की महक,
सबसे मधुर उनके चरित्र की दहक।

सप्तम सर्ग:

सर्वस्वरूप तुलसी सूर्य का तेज, चंद्र की शीतलता,
धरती का धैर्य, सागर की गंभीरता।
वायु की निर्मलता, आंधी का वेग,
सुगंध की मधुरता - सब कुछ एक साथ।
तुलसी में समाए थे सभी तत्व,
प्रकृति के कण-कण में बसे वे सत्व।
आकाश सा विशाल उनका हृदय,
अग्नि सा प्रज्वलित था संकल्प निश्चय।
जल सी निर्मलता, वायु सा प्रवाह,

पृथ्वी सा धैर्य था उनके पास।
परमात्मा से जुड़ाव था निरंतर,
इसलिए थे वे दिव्य, अलौकिक, सुंदर।

अष्टम:

कामायनी की गूंज जैसे कामायनी में श्रद्धा और मनु,
संघर्ष करते हैं जीवन के अणु।
आशा, चिंता, लज्जा के भावों से,
निकलते हैं नए जीवन के आवों से।
तुलसी के जीवन में भी था यही संघर्ष,
व्यक्ति और समाज के बीच संतुलन का प्रयास।
कभी श्रद्धा बनकर दिखाया प्रेम,
कभी मनु बनकर दिखाया धर्म।
जैसे कामायनी का अंत आनंद में,
वैसे ही उनका जीवन था मोक्ष के छंद में।
प्रसाद जी की लेखनी जैसी मधुर,
तुलसी का व्यक्तित्व था वैसा ही सुंदर।
छायावाद की भांति कोमल भावना,
प्रगतिवाद सी क्रांतिकारी कामना।

नवम सर्ग :

महाकाव्य की परिणति सूर्य, चंद्र,
धरती, सागर, वायु, आंधी, सुगंध,
सभी में दिखे तुलसी के दिव्य गुणों का बंध।
यह कामायनी नहीं, तुलसायनी है यह काव्य,
जहां हर शब्द में छुपा है दिव्य भाव्य।
श्रद्धा हो या मनु, आशा हो या चिंता,
सब में तुलसी की झलक मिलती चिंता।
आनंद में लीन यह महाकाव्य समाप्त हो,
पर तुलसी की कीर्ति सभी में व्याप्त हो।

दशम सर्ग:

प्रकृति में तुलसी को ढूंढना।
सूर्य देखो तो उनका तेज दिखेगा,
चांद देखो तो उनका प्रेम दिखेगा।
धरती को छुओ तो उनका धैर्य मिलेगा,
समुद्र को देखो तो उनका ज्ञान मिलेगा।
हवा में सांस लो तो उनकी निर्मलता,
फूलों की खुशबू में उनकी सरलता।
यह कामायनी नहीं, प्रकृति का महाकाव्य,
जहां तुलसी के गुण हैं सर्वत्र दृश्य।
यह तुलसायनी, कामायनी से भी मधुर,
प्रकृति और पुरुष का मिलन सुंदर।
जय तुलसी! जय प्रकृति के पुत्र!
तुम्हारी कीर्ति है अमर सूत्र।

जैन शासन रो बहुमान बढ़ायो!

● मोहन भत्साली, बीकानेर ●

चंदेरी रो लाल, वदना सुत!
झूमर कुल रो मान बढ़ायो,
भैक्षव गण रो सरताज,
जैन शासन रो बहुमान बढ़ायो।
असांप्रदायिक धर्म अणुव्रत रो परचम फहरायो,
संस्कार निर्माण में प्रेक्षाध्यान
जीवन विज्ञान रो पाठ पढ़ायो।।
भैक्षव गण रो सरताज,
जैन शासन रो बहुमान बढ़ायो...

संसद रे गलियारे में नैतिकता रो संदेश सुनायो,
दिल्ली रे दरबार में अनुशासन रो गजब वर्ष मनायो।
अशांत विश्व में शांति रो अनुपम पैगाम पहुंचायो,
दुनिया री मीडिया में गौर वर्ण
नाटे कद रो नायक छाया।।
भैक्षव गण रो सरताज,
जैन शासन रो बहुमान बढ़ायो...

हे कुंभकार! गांव रे नत्थू ने भगवान बणायो,
विनयवान मुनि मुदित ने जगत में पुजायो,
शासन माता, साध्वीप्रमुखा ने शिखरं चढ़ायो,
संघीय संपदाओं री श्रीवृद्धि में
अनोखो इतिहास रचायो।।
भैक्षव गण रो सरताज,
जैन शासन रो बहुमान बढ़ायो...

हे युगदृष्टा!
नारी रो उत्थान कर जग रो कल्याण करयो,
शिक्षा और प्रगति पथ पर
रुढ़िवाद समाज रो उदार करयो,
समण श्रेणी, उपासक
और जैन संस्कारक रो उद्भव करयो,
घोर विरोधी!
श्रद्धालु बन श्रीचरणों में जीवन सफल बनायो।।
भैक्षव गण रो सरताज,
जैन शासन रो बहुमान बढ़ायो...

अकल्पनीय अवदानों रो स्वर्णिम युग दिखायो,
साहित्य और संगीत सम्राट आगम रो सम्मान बढ़ायो,
पद विसर्जन रो अदम्य साहस
स्वर्णाक्षरों में अंकित हुयो,
सिरियारी रो तीर्थधाम श्रद्धावान रो
तीर्थ स्थल कहलायो।।
भैक्षव गण रो सरताज,
जैन शासन रो बहुमान बढ़ायो...

हे धर्म चक्रवर्ती सम्राट!
सेवा सुश्रुषा रो राजमार्ग बनायो,
शक्तिपीठ, गंगाणे रो '
अदृश्य शक्तिपुंज' नैया पार लगायो,
कहत 'मोहन' ज्योतिर्मय तुलसी
'मानव मसीहा' कहलायो,
साधना रो शिखर पुरुष तुलसी दीक्षा शताब्दी
रो वर्ष मनायो।
भैक्षव गण रो सरताज,
जैन शासन रो बहुमान बढ़ायो...



आचार्य भिक्षु त्रि-जन्म शताब्दी वर्ष पर श्रद्धा प्रणति

आत्मोदय के उत्प्रेरक : आचार्य श्री भिक्षु

● मुनि मदन कुमार ●

भगवान महावीर की परंपरा को समृद्ध और सशक्त बनाने वाले आचार्यों की श्रृंखला में आचार्य श्री भिक्षु का नाम अत्यन्त गौरवपूर्ण है। वे अध्यात्म, आचार निष्ठा और अनुशासन के जीवन्त रूप थे। उनकी तपस्या और साधना ने तेरापंथ धर्मसंघ को जन्म दिया। जोधपुर के एक सेवक कवि ने उनके धर्म समुदाय को तेरापंथ की संज्ञा दी और आचार्य श्री भिक्षु ने इस संबोधन को अभिनव अर्थ दिया-हे प्रभो ! यह तेरापंथ। मानव-मानव का यह पंथ।

आचार्य श्री भिक्षु का जन्म राजस्थान के पाली जिले के कंटालिया ग्राम में हुआ था। पिता बल्लूशाह और माता दीपाजी थे। बचपन में ही उनकी बुद्धि और प्रतिभा विलक्षण थी। वे गृहस्थ जीवन में और मुनि जीवन में सत्य के खोजी बनकर रहे। सत्य उनका सर्वोच्च गुरु तथा भगवान महावीर उनके उत्कृष्ट

प्रेरणा स्रोत थे। मन में गहन चिन्तन और मंथन किया कि यदि हमारे जीवन में आगम-विरुद्ध श्रद्धा और आचार रहा तो गृह-त्याग और अभिनिष्क्रमण का क्या अर्थ निकलेगा? सभी पहलुओं पर चिन्तन कर उन्होंने धर्म क्रान्ति का बिगुल बजा दिया।

जीवन भीषण कठिनाइयों और संघर्षों का केन्द्र बन गया। पहली कठिनाई प्रवास की आयी। उनका प्रथम प्रवास श्मशान में हुआ जहाँ व्यक्ति का अन्तिम प्रवास होता है। किन्तु कष्टों में भी चित्त की समाधि और लक्ष्य के प्रति समर्पण कभी खंडित नहीं हुआ। किसी व्यक्ति ने पूछा-आपका यह संयत और कठोर मार्ग कब तक चलेगा ? आचार्य श्री भिक्षु ने कहा कि जब तक इस धर्मसंघ के साधु-साध्वी श्रद्धा, आचार और अनुशासन में सुदृढ़ रहेंगे, साधु की मर्यादा का अतिक्रमण नहीं करेंगे तथा क्षेत्र और

श्रावकों के मोहपाश में नहीं फंसेंगे, तब तक यह मार्ग चलेगा। आचार्य श्री भिक्षु ने सदैव गुणवत्ता को कायम रखा तथा आचार और अनुशासन से हीन साधु-साध्वी को कभी नहीं बख्शा। धर्म क्रान्ति के समय वे तेरह साधु थे, जिनमें से केवल छह साधु जीवन पर्यन्त बने रहे। छत्तीस वर्ष तक पुनः तेरह साधु नहीं बने। वे शुद्ध श्रद्धा और साधना के हामी थे। वे कुशल कवि,

साहित्यकार और प्रवचनकार थे। प्रज्ञा के आलोक से उनकी लेखनी चलती थी। आचार्य श्री भिक्षु का समस्त साहित्य राजस्थानी भाषा की लगभग सौ कृतियों में गुंफित 38000 पद्य परिमाण जितना है।

आचार्य श्री भिक्षु ने कहा कि हर व्यक्ति को धर्म और आत्म शोधन का अधिकार है। यदि सब जीवों को आत्म विशोधि का अधिकार न हो तो पतित

जीवों का आत्मोदय कैसे होगा ? उन्होंने संप्रदाय मुक्त धर्म की परिभाषा देकर धार्मिक जगत पर असीम उपकार किया। उन्होंने कहा कि त्याग धर्म और भोग अधर्म, संयम धर्म और असंयम अधर्म, व्रत धर्म और अव्रत अधर्म है। इनके इस विशुद्ध और असांप्रदायिक विचार के प्रति सुधी और तत्त्व जिज्ञासु जनता का अनायास आकर्षण बढ़ा। अणुव्रत अनुशास्ता श्री तुलसी के शब्दों में- 'आचार्य श्री भिक्षु ने घोर कष्टों में भी सत्य को नहीं छोड़ा।'

आचार्य श्री भिक्षु ने सभी छोटे-बड़े जीवों के प्रति समानता की बात कही। उन्होंने किसी भी स्तर पर हिंसा को मान्यता नहीं दी, बल्कि धर्म के क्षेत्र में चल रही हिंसा का घोर विरोध किया। आचार्य श्री महाप्रज्ञ के अनुसार आचार्य श्री भिक्षु के शब्द कोष में तीन ही शब्द थे-आत्मा, महावीर और जिन-

आज्ञा। उनकी प्रत्येक बात में सबसे पहले आत्मा की ध्वनि है। आत्मा के दो पर्याय हैं-महावीर और जिन-आज्ञा। जो व्यक्ति इन तीनों में रमण करता है, वह आत्मकेन्द्रित हो जाता है। जिन आज्ञा के प्रति अटूट श्रद्धा आचार्य श्री भिक्षु का सर्वोच्च गुण था। आचार्य श्री भिक्षु के व्यापक चिन्तन को उजागर करते हुये आचार्य श्री महाप्रज्ञ लिखा है- 'जो व्यक्ति आध्यात्मिक होता है, वह दूसरों को मुक्त करना चाहता है। आचार्य श्री भिक्षु ने कभी किसी को बांधा नहीं। उन्होंने मुक्तता दी, स्वतंत्रता दी और विवेक को जगाया।' आचार्य श्री भिक्षु के व्यवस्था कौशल को उद्योतित करते हुये आचार्य श्री विद्यानन्दजी ने कहा कि आचार्य श्री भिक्षु ने तेरापंथ धर्मसंघ को जो व्यवस्थाएं और मर्यादाएं दीं, उनकी आज भी वही उपयोगिता और प्रयोजनीयता है।

Acharya Bhikshu - My Inspiration

● Nikhil Bantia, Bangalore ●

In this world, countless people draw inspiration from different figures—be it a film star, an entrepreneur, or even a politician. What they all seem to share is a story that begins in humble circumstances. Despite the weight of their realities, they push forward with unshakable passion and determination, eventually reaching great heights.

But there exists another, rarer kind of inspiration. These are not people who rise by climbing the ladder of success, but those who step down from it willingly, even when greatness is within their grasp. They are the ones who choose principles over position, truth over titles,

and inner conviction over external recognition.

Acharya Bhikshu, lovingly remembered as Swamiji, belongs to this rarest of categories. At a time when leadership and respect were within his reach, he chose instead to stand firmly for the truth. In a world where most people compromise even for roti, kapda aur makaan — Swamiji walked a higher path.

Hunger and hardship did not weaken him—they became the fire that forged his resolve to uphold the pure teachings of Lord Mahavir.

It was his resilience and fearless commitment that gave birth to Terapanth, a legacy that thrives united under one

Acharya even today.

उनका आचार के प्रति जागरूकता, सत्य के लिए समर्पण और उनकी निर्भीकता ने तेरापंथ को ऐसा सुदृढ़ और एकसूत्री संगठन बना दिया, जो आज भी एक ही आचार्य के सक्षम नेतृत्व में दृढ़ता से खड़ा है।

Acharya Bhikshu did not just lead a community—he created a movement rooted in truth, discipline, and unity. His life reminds us that inspiration is not about reaching heights, but about building something eternal with principles as its foundation. For me, that is why I say with pride and reverence—Acharya Bhikshu is my inspiration.

'Inspiration is not in reaching the top, but in refusing to bow when principles are at stake.'

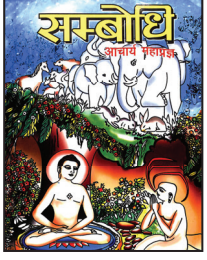
ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव कार्यक्रम का आयोजन

पीलीबंगा। मुनिश्री विनोद कुमार के पावन सानिध्य में ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव कार्यक्रम का आयोजन हुआ। नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण के पश्चात ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों के द्वारा मंगलाचरण किया गया। महासभा आंचलिक प्रभारी देवेन्द्र बांठिया, महिला मंडल की कर्मठ सदस्य सुशीला नाहटा, तेरापंथ सभा के मंत्री प्रकाश डाकलिया, ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका अंकिता सुराणा ने अपने विचार व्यक्त किए और अभिभावकों को प्रेरित किया कि सभी अपने बच्चों को ज्ञानशाला जरूर भेजें। बच्चों ने योग की महत्ता बताते हुए एक बहुत ही रोचक प्रस्तुति दी।

मुनिश्री ने अपने मंगल पाथेय में कहा 'ज्ञानशाला एक महत्वपूर्ण उपक्रम है जिसमें सभी बच्चों में सदसंस्कारों का बीजारोपण किया जाता है। सभी बच्चों को प्रतिदिन योग करने के लिए प्रेरित किया। अंत में सभी बच्चों को पुरस्कार वितरित किए गए। सभा के द्वारा जाप, पौषध एवं प्रशिक्षिकाओं का सम्मान किया गया।

अच्छी संख्या में सधार्मिक भाई बहनों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन सतीश पुगलिया ने किया।

संबोधि

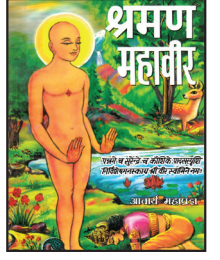


परिशिष्ट



-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

श्रमण महावीर



क्रान्ति का सिंहनाद

तप का यथार्थरूप

तप क्या है? तप अग्नि है। अग्नि का स्वभाव है जलाना, ऊपर उठना और आकाश में व्याप्त हो जाना। तप का काम भी यही है। वह भीतर जो विजातीय तत्त्व एकत्रित हो गया है, उसे जला डालता है। मल-आवरण के जल जाने पर चेतना का ऊर्ध्वारोहण होता है और अन्त में साधक अपने चिदाकाश में समाहित हो जाता है। जीवनीशक्ति प्रतिक्षण दूसरों में उत्सुक होकर बाहर बह रही है, उसे रोकने की कला तप है। तप किया और चेतना का अतिक्रमण नहीं हुआ, वह स्वयं को पाने उत्सुक नहीं हुई तो समझना चाहिए कि तप का प्रयोजन सफल नहीं हुआ। आचार्य हेमचन्द्र ने उस उपवास को लंघन कहा है जिसमें कषाय (क्रोध, अहंकार, माया, कपट और लोभ) तथा इन्द्रिय-विषय का त्याग न कर केवल आहार का त्याग किया जाता है। भोजन को छोड़कर चेतना को ऊपर उठाना है, उसे सब तरफ से समेट कर अस्तित्व की दिशा में प्रवाहित करना है। ऊर्जा का स्रोत बाहर जाने से बन्द होगा तब एक नया उत्ताप पैदा होगा। वही ताप अशुद्धि को जलाकर एक नई शक्ति से जीवन की भरेगा। महावीर का वास्तविक तप यही है। वे चाहते हैं कि ऊर्जा अपने भीतर ठहर जाये। इसीलिए उन्होंने यह प्रक्रिया दी। तप शब्द से, भले ही कोई घबराये, किन्तु सब धर्मों में यह स्वीकृत है। सारे धर्म इस बात में एक हैं कि चेतना बाहर प्रवाहित न हो। चेतना का अंतर्मुखी जो प्रवाह है वह तप है। इसे स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं आ सकती, इसलिए प्रत्यक्ष और परीक्षरूप से 'तपोयोग' में सभी धर्म सहमत हैं।

तप का विवेक

महर्षि पतञ्जलि ने कहा है- 'तप से शरीर और इन्द्रियों की अशुद्धि क्षीण होने से देह और इन्द्रियों की सिद्धि उत्पन्न होती है।' गीता में श्रीकृष्ण ने मन, वाणी और काया के तपों का स्पष्ट दिग्दर्शन कराया है। पूज्य व्यक्तियों का पूजन, पवित्रता, सरलता, ब्रह्मचर्य और अहिंसा 'शरीर' तप है। किसी को उद्विग्न न करने वाले सत्य, प्रिय और हितकर वचन बोलना, आध्यात्मिक शास्त्रों का अध्ययन करना वाक्मय तप है। चित को सदा प्रसन्न रखना, सौम्य, मौन और आत्म-निग्रह करना 'मानस' तप है। भूख-प्यास आदि पर उपवास-व्रत द्वारा विजय प्राप्त कर शरीर को साधना के अनुकूल बनाना तप है। इस प्रकार तप की अस्वीकृति का दर्शन कहीं नहीं है। तप का भयावह चित्र या निरादर जो सामने आया है, वह अविवेक के कारण आया है। तप के साथ विवेक रहता है तो निःसन्देह तप श्रद्धेय और समाचरणीय बनता है। बुद्ध ने तप की अति का वर्जन किया है, तप का नहीं। गीता में 'युक्ताहारविहारस्य' कह कर सर्वत्र विवेक का स्वर प्रकटित किया है। महावीर को भी तप अतिप्रिय नहीं था। उन्होंने स्पष्ट किया है- 'प्रत्येक कार्य में साधक सबसे पहले अपने शरीर बल, मनोबल, श्रद्धा, आरोग्य, क्षेत्र और काल-समय का यथोचित परिज्ञान कर फिर स्वयं को तप में नियोजित करें।' तप के साथ अगर इतना गहरा जागरण होता तो वह क्रमशः अनेक ग्रंथियों का उद्घाटन करता और आध्यात्मिक दिशा में एक नया कीर्तिमान स्थापित करता। (क्रमशः)

धर्म की पहली सीढ़ी है- 'सम्यग् दृष्टि का निर्माण और सम्यग्दृष्टि की पहली पहचान है- शान्ति और मैत्री के मानस का निर्माण। जिसके मन में प्राणीमात्र के प्रति मैत्री की अनुभूति नहीं है, वह महावीर की दृष्टि में धार्मिक नहीं है। चण्डप्रद्योत ने महावीर के इस सूत्र का उपयोग कर अपने को बंदीगृह से मुक्त करवाया था।

चण्डप्रद्योत सिन्धु-सौवीर के अधिपति उद्रायण की रूपसी दासी का अपहरण कर उसे उज्जयिनी ले आया। पता चलने पर उद्रायण ने उज्जयिनी पर आक्रमण कर दिया। चण्डप्रद्योत पराजित हो गया। उद्रायण ने उसे बंदी बना सिन्धु-सौवीर की ओर प्रस्थान कर दिया। मार्ग में भारी वर्षा हुई। उद्रायण ने दसपुर में पड़ाव किया। वहां सांवत्सरिक पर्व आया। उद्रायण ने वार्षिक सिंहावलोकन कर चण्डप्रद्योत से कहा- 'इस महान् पर्व के अवसर पर मैं आपको क्षमा करता हूं। आप मुझे क्षमा करें।' चण्डप्रद्योत ने कहा- 'क्षमा करना और बंदी बनाए रखना ये दोनों एक साथ कैसे हो सकते हैं? आप बंदी से क्षमा करने की आशा कैसे करते हैं? भगवान् महावीर ने मैत्री के मुक्त क्षेत्र का निरूपण किया है। उसमें न बंदी बनने का अवकाश है और न बंदी बनाने का। फिर महाराज! आप किस भाव से मुझे क्षमा करते हैं, और मुझसे क्षमा चाहते हैं?'

उद्रायण को अपने प्रमाद का अनुभव हुआ। उसने चण्डप्रद्योत को मुक्त कर मैत्री के बंधन से बांध लिया। दोनों परम मित्र बन गए।

भगवान् ने अनाक्रमण के दो आयाम प्रस्तुत किए- आन्तरिक और बाहरी। उसका आन्तरिक आयाम था- मैत्री का विकास और बाहरी आयाम था- निःशस्त्रीकरण। निशस्त्रीकरण की आधार-भित्तियां तीन थीं,

१. शस्त्रों का अव्यापार।
२. शस्त्रों का अवितरण।
३. शस्त्रों का अल्पीकरण।

आक्रमण के पीछे आकांक्षा या आवेश के भाव होते हैं। वे मनुष्य को मनुष्य का शत्रु बनाते हैं। शत्रुता का भाव जैसे ही हृदय पर अपना प्रभुत्व स्थापित करता है, वैसे ही भीतर बह रहा प्रेम का स्रोत सुख जाता है। मन सिकुड़ जाता है। बुद्धि रूखी-रूखी सी हो जाती है। मनुष्य क्रूर और दमनकारी बन जाता है। यह हमारी दुनिया की बहुत पुरानी बीमारी है। इसकी चिकित्सा का एकमात्र विकल्प है- समत्व की अनुभूति का विकास, मैत्री की भावना का विकास। इस चिकित्सा के महान् प्रयोक्ता थे भगवान् महावीर। उनका अनाक्रमण का सिद्धान्त आज भी मानव की मृदु और संयत भावनाओं का प्रतिनिधित्व कर रहा है।

10. असंग्रह का आन्दोलन

शरीर और भूख-दोनों एक साथ चलते हैं। इसलिए प्रत्येक शरीरधारी जीव भूख को शांत करने के लिए कुछ न कुछ ग्रहण करता है। बहुत सारे अल्प-विकसित जीव भूख लगने पर भोजन की खोज में निकलते हैं और कुछ मिल जाने पर खा-पी सन्तुष्ट हो जाते हैं। वे संग्रह नहीं करते। कुछ जीव थोड़ा-बहुत संग्रह करते हैं। मनुष्य सर्वाधिक विकसित जीव है। उसमें अतीत की स्मृति और भविष्य की स्पष्ट कल्पना है। इसलिए वह सबसे अधिक संग्रह करता है।

मनुष्य जब अरण्यवासी था तब केवल खाने के लिए सीमित संग्रह करता था। जब वह समाजवादी हो गया तब संग्रह के दो आयाम खुल गए एक आवश्यकता और दूसरा बड़प्पन।

आवश्यकता को पूरा करना सबके लिए जरूरी है। उसमें किसी को कैसे आपत्ति हो सकती है? बड़प्पन में बहुतों को आपत्ति होती है और वह विभिन्न युगों में विभिन्न रूपों में होती रही है।

महावीर के युग में लोग भूखे नहीं थे और आर्थिक समानता का दृष्टिकोण भी निर्मित नहीं हुआ था। लोग भूखे नहीं थे और भाग्यवाद की पकड़ बहुत मजबूत थी, इसलिए अर्थ-संग्रह करने वालों के प्रति आक्रोशपूर्ण मानस का निर्माण नहीं हुआ था। (क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्वीश्री अनांजी (लाडनू) दीक्षा क्रमांक 203

साध्वीश्री तपस्विनी थी। जो तप विवरण प्राप्त है वह इस प्रकार है- सं. 1910 में 16 दिन, 1911 में 34 दिन, 1912 में 14 दिन, 1913 में मासखमण, 1914 में 34 दिन, 1915 में 21 दिन का तप किया।

- साभार : शासन समुद्र -



कंटालिया है साखी बाबा थारें उपकार री,
जुड़ गई प्रीत म्हा पर महाश्रमण सरकार री।



क्रांत दृष्टा आचार्यश्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष

महाचरण

कंटालिया



तेरापंथ के आद्यप्रवर्तक परम पूज्य आचार्यश्री भिक्षु के जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के जन्म भूमि
कंटालिया में आयोजित महाचरण पर महामना आचार्यश्री भिक्षु को कोटि-कोटि श्रद्धा नमन

पावन सान्निध्य प्रदाता परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी
का सादर अभिनंदन-अभिवंदन

श्रद्धाप्रणत

आचार्य भिक्षु जन्मस्थली समिति, कंटालिया

तेरापंथ महिला मंडल, कंटालिया | समस्त श्रावक समाज, कंटालिया



भिक्षु-भूमि तेजोमय,
समुज्ज्वल निर्मल-निर्झर रसधार बहे,
श्रद्धा की सुरभित सरिता में अभिषिक्त,
गुरु-सन्निधि की मनुहार रहे।



श्रद्धाप्रणत

एम. गौतमचंद ऋषभ रितेश मानव नमन सेठिया
चेन्नई (मरुधर में कंटालिया)



कंटालिया है साखी
बाबा धारें उपकार री,
जुड जाए प्रीत म्हा पर
महाश्रमण सरकार री।

श्रद्धाप्रणत

मैनावती हस्तीमल गादिया
लता राजेंद्र कांकरिया
गादिया एवं कांकरिया परिवार
कंटालिया - पिंपरी चिंचवड (महाराष्ट्र)



धर्म है उत्कृष्ट मंगल



धर्म है
उत्कृष्ट मंगल

आचार्य महाश्रमण

-आचार्यश्री महाश्रमण

समाज-सुधार के सूत्रधार :
गुरुदेव श्री तुलसी



कहीं-कहीं कन्याएं खड़ी होकर एक साथ संकल्प करती कि हम दहेज के लोभी भिखारियों के साथ शादी नहीं करेंगी। जो दहेज की याचना करते हैं, वे याचक हैं; भिखारी हैं। हम जीवन भर अविवाहित रह जाएंगी पर याचकों को अपना जीवन साथी नहीं बनाएंगी। इस तरह विविध उपहारों से उपहत होती हुई मेवाड़ की यह धर्म-यात्रा प्रवर्धमान थी।

स्वाध्याय का महत्त्व

'बेमाली' नामक छोटा-सा ग्राम। ब्रह्ममुहूर्त का नीरव वातावरण। परमाराध्य आचार्य प्रवर अपने अनुष्ठान में संलग्न थे। पास में ही कुछ संत बैठे थे। उनमें से दो बाल-संत सह स्वाध्याय कर रहे थे। शिशु संतों की स्वर लहरी गुरुदेव की कर्णातिथि बनी। थोड़ी ही देर बाद अर्हत्-वंदना का समय हो गया। सारे मुनिजन गुरुदेव की सन्निधि में आसीन हो गए। आचार्यवर ने स्वाध्याय की प्रेरणा देते हुए कहा- प्रातःकाल स्वाध्याय के शब्द कम सुनाई देते हैं। स्वाध्याय को बढ़ावा मिलना चाहिए। ध्यान और जप की भांति स्वाध्याय भी एक सशक्त साधन है, अन्तः शुद्धि का। इस सन्दर्भ में गुरुवर ने एक गाथा का उल्लेख किया जो दशवैकालिक सूत्र की हृदयस्पर्शी गाथाओं में से एक है-

सज्जायसज्जाणरयस्स ताइणो।
अपावभावस्स तवे रयस्स।।
विसुज्झई जसि मलं पुरेकडं।
समीरियं रुप्पमलं व जोइणा।।

स्वाध्याय और सदुध्यान में संलग्न, षट्काय जीवों के रक्षक, पवित्र मावधारा से परिवृत तथा तपोरत साधक का पुराकृत मल उसी प्रकार साफ हो जाता है जैसे अग्नि से प्रेरित स्वर्ण का मल।

आगमों में निर्जरा के बारह प्रकार बतलाए गए हैं। उनमें स्वाध्याय का दसवां स्थान है। यह एक महत्त्वपूर्ण ही नहीं, अपितु साधक के लिए अवश्यकरणीय अनुष्ठान है।

वृहत्कल्प भाष्य में स्वाध्याय की महिमा बताते हुए कहा गया है-

बारसविहम्मि वि तवे,
सब्भितर बाहिरे कुसलदिट्ठे।
नय अत्थि नवि अ होही,
सज्जाय समं तवोकम्मं।।

सर्वज्ञोपदिष्ट आभ्यान्तर और बाह्य भेदों से युक्त बारह प्रकार के तप में स्वाध्याय के समकक्ष न कोई तपः कर्म है और न भविष्य में होगा।

किसी भी तपोनुष्ठान की आराधना के लिए उसका ज्ञान होना अनिवार्य होता है। ज्ञान प्रप्ति का एकमात्र साधन है- स्वाध्याय। इस दृष्टि से स्वाध्याय को श्रेष्ठ तप माना गया है।

आचार्य प्रवर ने अनेक साधुओं को व्यक्तिशः पूछा और उनके दैनिक स्वाध्याय के बारे में जानकारी प्राप्त की। गुरुवर ने उपस्थित मुनिवृन्द को स्वाध्याय के लिए प्रेरणा प्रदान की।

क्या चाहते हैं युवाओं से गुरुदेव श्री तुलसी

जन्म लेना और मरना एक नियति है। इसमें मनुष्य स्वाधीन नहीं है। हर आदमी जन्मता है और मर जाता है। जन्म और मृत्यु अपने आप में कोई महत्त्वपूर्ण नहीं है। महनीय और गर्हणीय होती है उनके बीच की अवधि, जिसे जीवन कहा जाता है। जिस व्यक्ति का जीवन महानता की निवास-भूमि बन जाता है, उसके जन्म और मृत्यु भी स्मरणीय एवं श्लाघनीय बन जाते हैं।

२० अक्टूबर १९१४ को एक शिशु ने लाडनू, जिला नागौर में जन्म लिया। ११ वर्ष की लघु वय में वह अध्यात्म-साधना और सन्तता के लिए कृतसंकल्प हो गया। २२ वर्ष की नवयौवन को अवस्था में उसके कन्धों पर एक विशाल धर्मसंघ के नेतृत्व का दायित्व आ गया। उसने सम्प्रदाय के घेरे से बाहर निकल कर अध्यात्म के मुक्त आकाश में परिभ्रमण का सफल प्रयास किया। उसकी निष्पत्ति हुई-असाम्प्रदायिक धर्म के रूप में अणुव्रत आन्दोलन का सूत्रपात, प्रेक्षाध्यान की विधि का आविष्कार, शिक्षा के क्षेत्र को जीवन विज्ञान का अवदान, जैन आगमों का असाम्प्रदायिक सम्पादन, समण श्रेणी का प्रादुर्भाव आदि। खुले आकाश के मुक्त संचरण ने उसको व्यापकता दी, देश-विदेश में उसका नाम चर्चित हुआ-आचार्य तुलसी। (क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र



तेरापंथ टाइम्स

की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन
करें या आवेदन करें

<https://abtyp.org/prakashan>



समाचार प्रकाशन हेतु

abtypitt@gmail.com पर ई-मेल
अथवा 8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्



जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री कालूरामजी युग

मुनिश्री चम्पालालजी (गोगुन्दा) दीक्षा क्रमांक 451

मुनिश्री अच्छे तप साधक थे। आपने सत्तरह साल साधु पर्याय का पालन किया जिसमें छह साल एकांतर तप किया तप की समग्र सूची निम्न प्रकार है- उपवास/197, 5/9, 6/2, 7/6, 8/9, 9/4, 10/2, 11/2, 12/2, 13/1, 14/1, 15/1, 16/1 इस तालिका में एकांतर तप के उपवासों की गणना नहीं है। अन्त में 7 दिन चौविहार संलेखना तप, तीन दिन चौविहार अनशन कुल दस दिन में पंडित मरण को प्राप्त किया।

- साभार : शासन समुद्र -

आचार्य श्री तुलसी के 112वें जन्म दिवस पर विविध आयोजन

मदुरै

गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी के 112वें जन्म दिवस एवं अणुव्रत दिवस का आयोजन मुनि श्री हिमांशु कुमार जी ठाणा-2 के पावन सान्निध्य में तेरापंथ भवन, मदुरै में श्रद्धा एवं उल्लासपूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मंत्रोच्चार से हुआ। मुनि श्री हिमांशु कुमार जी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में आचार्य तुलसी के अद्भुत व्यक्तित्व, उनके अणुव्रत आंदोलन, मानवता के प्रति समर्पण और समाज सुधार के कार्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने गुरुदेव तुलसी के साथ बिताए अपने संस्मरणों को साझा कर सभी को भाव-विभोर किया। मुनि हेमंत कुमार जी ने भी अपने विचारों में आचार्य तुलसी द्वारा स्थापित आदर्शों को जीवन में अपनाने का संदेश दिया। मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। उक्त जानकारी सभा निवृत्तमान अध्यक्ष अशोक जीरावला ने दी।

रेलमगरा

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के नवम आचार्य, आचार्य श्री तुलसी एक ऐसे संत थे जो दूरदृष्ट, क्रांति के प्रवर्तक, करुणा के सागर और संस्कृति के शिल्पी थे। उन्होंने कई अनमोल ग्रंथों की रचना की, साथ ही अर्हत वंदना, अणुव्रत गीत से नई पहचान दिला तेरापंथ को शिखर तक पहुंचाया। उन्होंने जो गीत लिखे उन्हें जब गाते तो आत्मा को छू जाते। आज उनके दुवारा लिखित तेरापंथ प्रबोध तेरापंथ की पहचान बन गया। उनके सामने कई अवरोध आये परन्तु उनकी त्याग तपस्या के सामने टिक नहीं पाए, ऐसे महा मनीषी थे।

उन्होंने साधना को समाज-सुधार से जोड़ा और अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से न केवल तेरापंथ धर्मसंघ को, बल्कि समस्त मानवता को नैतिकता, संयम और अहिंसा का सार्वभौमिक संदेश दिया। आचार्य तुलसी ने धर्म को केवल पूजा या अनुष्ठान तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे जीवन-साधना और सामाजिक चेतना का माध्यम बनाया। उन्होंने हजारों किलोमीटर की पदयात्रा कर हर वर्ग के व्यक्ति से संवाद किया — गरीब की झोपड़ी से लेकर राष्ट्रपति भवन तक उनके विचारों का प्रभाव पहुँचा। वे सामाजिक क्रांति के नायक थे — जिनके मार्गदर्शन से समाज में बाल विवाह, पर्दा प्रथा, मृत्युभोज और दहेज

जैसी कुप्रथाओं पर अंकुश लगा। उन्होंने नारी शिक्षा का दीप प्रज्वलित किया, जिसकी आभा आज हर क्षेत्र में झलकती है। आज महिलाएँ डॉक्टर, प्रशासक, पुलिस अधिकारी, सैनिक और अंतरिक्ष यात्री बनकर समाज का गौरव बढ़ा रही हैं — यह सब आचार्य श्री तुलसी की दूरदृष्टि और प्रेरणा का परिणाम है। आज सरकारें भी उनके विचारों को अपनाकर जन-जन को प्रेरित कर रही हैं, ताकि देश विकसित और नैतिक मूल्यों पर आधारित बन सके। उनका चिंतन — महिला सशक्तिकरण, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सामाजिक समरसता जैसे विषयों पर — आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उनके जीवनकाल में था। आत्ममंथन का समय — क्या हम नई कुरुतियाँ गढ़ रहे हैं? आज जब हम आचार्य तुलसी के जन्मोत्सव को अणुव्रत दिवस के रूप में मना रहे हैं, तो यह आत्मचिंतन का अवसर भी है। गुरुदेव तुलसी ने हमें जिन कुरुतियों और रूढ़िवाद से मुक्त कराया, क्या हम आज नई कुरुतियाँ तो नहीं गढ़ रहे? प्रि-वेडिंग शूट्स, दिखावटी डांस, शादी समारोहों में फिजूलखर्ची और मृत्युभोज के नए रूप — क्या ये सब हमारे संस्कारों और सामाजिक मूल्यों को कमजोर नहीं कर रहे? कुछ स्थानों पर इनका परिणाम संबंधों में तनाव और समाज की छवि पर धब्बे के रूप में देखा जा रहा है। गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी हमें भले ही भौतिक रूप से छोड़कर चले गए हों, पर उनका पाथेय और मार्गदर्शन आज भी हमारे साथ है। आइए, हम उनके आदर्शों की पुनः स्थापना करें — संस्कार, सादगी और संयम की भावना को फिर से जीवंत करें। उनके दिए अवदानों और अणुव्रत के संदेशों के अनुरूप अपने समाज को संस्कारयुक्त, सशक्त और सहिष्णु बनाएं — तभी उनका जन्मोत्सव मनाना वास्तव में सार्थक होगा।

कोलकाता

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक, राष्ट्रसंत आचार्य श्री तुलसी का 112वाँ जन्म दिवस अणुव्रत दिवस के रूप में अणुव्रत समिति कोलकाता व जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा (कलकत्ता - पूर्वांचल ट्रस्ट द्वारा भिक्षु विहार में आयोजित किया गया। इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा- आचार्य

श्री तुलसी एक देदीप्यमान सूर्य बनकर आए। संयम और तप में पराक्रम कर वे महर्षि देवर्षि ब्रह्मर्षि कहलाए। उनका जीवन निर्मल व पवित्र था। वे साहित्यकार प्रवचनकार, संगीतकार और संघ के सारथी थे। वे एक महान परिवर्तक थे। उन्होंने मानव उत्थान के लिए प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अणुव्रत की त्रिपदी दी। नैतिकता, सद्भावना और नशामुक्ति का आलोक बाँटा। अणुव्रत सुरक्षा कवच है। धर्म और व्यवहार का सेतु है। महाव्रती नहीं बन सकते हैं तो कम से कम अणुव्रती तो बने। मुनि ने आगे कहा- आचार्य तुलसी का जीवन बहुआयामी था। जैन विश्व भारती पूज्य गुरुदेव का कल्पवृक्ष अभियान है जो सारे संसार को जैन धर्म का संदेश देता है। मुमुक्षु संस्था समण श्रेणी, यूनिवर्सिटी, ज्ञानशाला, उपासक महान संत के अलौकिक अवदान है। विश्व के महान संत ने पद का विसर्जन कर के आश्चर्यजनक कार्य किया जो कुर्सी से चिपके लोगों के लिए प्रेरणा है। असाधारण प्रतिभा के धनी युगदृष्ट, युगसृष्ट, युग प्ररुष, युगचिंतक आचार्य श्री तुलसी के 112वें जन्मदिवस की पुण्य बेला में उनका सुमिरन करता हूँ। हे प्रभो ऐसी शक्ति दे जिससे साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ते रहे। मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल, पूर्वांचल ने किया। स्वागत भाषण अणुव्रत समिति कोलकाता के अध्यक्ष नवीन दुगड़ ने दिया। इस अवसर पर महासभा के पूर्व अध्यक्ष सुरेश गोयल, कलकत्ता सभा के पूर्व अध्यक्ष तेजकरण बोथरा, पूर्वांचल सभा के अध्यक्ष संजय सिंधी, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष बबीता तातेड, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष राजीव बोथरा तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के पूर्व अध्यक्ष प्रवीण सुराणा ने अपने विचार व्यक्त किये। पूर्वांचल स्वर लहरी के सदस्यों ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किए। आभार ज्ञापन सभा मंत्री पंकज डोसी ने किया। संचालन मुनि परमानंद ने किया। इस अवसर पर अच्छी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे।

शास्त्री नगर, दिल्ली

आचार्य श्री तुलसी का 112 वां जन्मदिवस तेरापंथ भवन, शास्त्री नगर, दिल्ली में उल्लासपूर्ण वातावरण में मनाया गया। समारोह को संबोधित करते हुए शासन श्री साध्वी श्री सुवर्ता जी ने कहा तुलसी एक ऐसे युगपुरुष थे जिनके

जीवन दर्शन ने पूरी की पूरी सदी को आलोकित किया। वो एक ऐसा संत था जिसने अपने चरणों से धरती और चिंतन से गगन को मापा। वो एक ऐसा प्रकाश पुंज था जो नवें दशक के सोपान पर आरोहण करने की गति प्रकाश और ऊर्जा से भरा रहा। आपकी जन्मकुंडली में 3 चीजों का योग था 1. संघर्ष 2. भाग्य और 3. सहयोग। आप जहां भी जाते संघर्ष आपके साथ साथ चलता था। कलकत्ता, रायपुर और चुरु के संघर्षों ने तो श्रावकों के दिलों को हिला कर रख दिया था, पर आपका साहस अटल और अचल रहा। इन संघर्षों के द्वारा आपकी यशोकीर्ति दिग दिगंत में विश्रुत बन गई। आपने तेरापंथ धर्मसंघ की गरीमा विश्व क्षितिज तक पहुंचाई। आपने तेरापंथ धर्मसंघ को अनेकानेक अवदान प्रदान किए जैसे अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, आगम संपादन, युवक परिषद्, महिला मंडल, ज्ञानशाला आदि। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी कार्तिक प्रभा जी एवं साध्वी चिंतन प्रभा जी ने तुलसी अष्टकम से किया। शासन श्री साध्वी श्री सुमनप्रभा जी ने तुलसी चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा- उनका जीवन अनेकानेक विशेषताओं का संग्रहालय था, जिसको समग्रता से बताना अति कठिन है। साध्वी कार्तिक प्रभा जी ने भावपूर्ण शब्दों से गुरुदेव श्री तुलसी की अभ्यर्थना की। साध्वी चिंतन प्रभा जी ने मधुर स्वरलहरी से आस्था की अभिव्यक्ति की। मध्य दिल्ली महिला मंडल द्वारा गीतिका, अणुव्रत समिति से सुशील बैंगानी एवं अशोक सेठिया द्वारा गुरुदेव के अवदानों पर गीतिका प्रस्तुत की। त्रिनगर सभा के मंत्री मनोज बेगवानी आदि सदस्यों ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत कर कार्यक्रम को तुलसीमय बना दिया। इस अवसर पर शास्त्री नगर सभा के अध्यक्ष राजा कोठारी, मध्य दिल्ली महिला मंडल की अध्यक्षा कनक चोपड़ा, पीतम पुरा सभा से राकेश जैन, अणुव्रत समिति के पूर्वाध्यक्ष अशोक संचेती, अणुव्रत समिति के सहमंत्री प्रवीण जैन, महिला मंडल से प्रियंका गोलछा, दिल्ली सभा की मंत्री एवं महिला मंडल पूर्वाध्यक्षा मंजू जैन आदि ने अपने श्रद्धा सुमन अर्पित कर गुरुदेव श्री तुलसी को स्मरण किया। राजेंद्र नगर से सुरेश जैन एवं महिला मंडल मध्य दिल्ली की शारदा सेठिया ने भी अपनी सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा के मंत्री प्रवीण गोलछा ने किया।

भक्तामर महा अनुष्ठान का सफल आयोजन

रेलमगरा। तेरापंथ भवन में महा तपस्वी आचार्य महाश्रमण जी के आज्ञानुवती मुनि श्री संजय कुमार के सान्निध्य एवं मुनि श्री प्रकाश कुमार एवं मुनि श्री सिद्ध प्रज्ञ के कुशल निर्देशन में पहलीबार भक्तामर महा अनुष्ठान का सफल आयोजन तेरापंथ सभा रेलमगरा द्वारा किया गया। मुनि संजय कुमार ने कहा भक्तामर आचार्य मान तुंग द्वारा संस्कृत भाषा का अद्भूत चमत्कारी स्रोत है इसमें कुल 48 श्लोक, 2688 अक्षर हैं। इसके विधिवत अनुष्ठान से मनश्छित्त कार्य होते हैं। मुनि प्रकाश कुमार जी ने शुद्ध उच्चारण करते हुए सामुहिक संधान कराया। 60 लोगों ने भाग लिया। मुनि सिद्ध प्रज्ञ ने ऋद्धि मंत्रो का प्रभावी ढंग से प्रयोग कराते हुए भक्तामर से होने वाले शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक लाभ की जानकारी दी। तेरापंथ सभाध्यक्ष मुकेश मेहता ने आभार व्यक्त किया 'अशोक मेहता की ओर से अल्पाहार की सुंदर व्यवस्था की गई। कशोर मंडल के संयोजक मोक्ष सोनी, प्रतीक लोढ़ा आदि का सहयोग रहा। अनुष्ठान को श्रद्धालु जनों ने बहुत सराहना करते हुवे नियमित पाठ करने का संकल्प किया।

27वां रक्तदान शिविर का आयोजन

पूर्वांचल कोलकाता। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद, पूर्वांचल-कोलकाता द्वारा आयोजित इस सत्र के 27th वें रक्तदान शिविर यूनिवर्सिटी सिटी रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन, व Kucaoa के साथ में न्यूटाउन 12/10/25 को किया। जिसमें कुल 25 यूनिट रक्त का दान वहाँ के निवासियों द्वारा प्राप्त हुआ।

तेयुप पूर्वांचल परिषद उनके इस जज्बे को नमन करती है। शिविर में आज अपनी सेवाएं दी परिषद से कार्यकारिणी सदस्य विनीत नौलखा, हर्ष सिरोहिया व पूर्व सदस्य नीरज बेगानी। शिविर की आयोजना में विशेष सहयोग प्राप्त हुआ यूनिवर्सिटी सिटी रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन, व Kucaoa के विनीत नौलखा व पदाधिवारीगण एवं निवासियों का।

परिषद सभी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है। रक्तदान शिविर के इस सत्र के वार्षिक प्रायोजक पवन जैन दुगड़ को भी बहुत साधुवाद।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र 'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स' में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. 8905995002 पर व्हाट्सअप अथवा abtyptt@gmail.com पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए
नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।

<https://terapanthtimes.org/>

:: निवेदक ::



अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

वीतराग पथ कार्यशाला का भव्य आयोजन

गाँधीनगर दिल्ली।

अभातेयुप द्वारा निर्देशित तेरापंथ युवक परिषद् गाँधीनगर दिल्ली द्वारा तेरापंथ भवन, कृष्णनगर दिल्ली में वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन हुआ। जो आत्मकल्याण और साधना की दिशा में एक अद्भुत पहल सिद्ध हुई। मुनिश्री के मुखारविंद से नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ कार्यशाला का शुभारम्भ हुआ। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन JSTS गाँधीनगर दिल्ली अध्यक्ष निर्मल छलाणी ने किया। तेयुप अध्यक्ष श्री क्रांति बरडिया ने सभी का स्वागत व अभिनंदन किया। इस कार्यशाला का मुख्य आकर्षण रहा बहुश्रुत मुनिश्री उदितकुमार स्वामी ठाणा-3 का प्रेरणामयी प्रवचन शैली। मुनिश्री ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि जो व्यक्ति वीतराग पथ पर चलना

चाहता है उसे अपने भीतर झाँकना होगा। आत्मा की शुद्धता, विचारों की पवित्रता और चर्या की सजगता ही वीतरागता का सच्चा आधार है।

मुनिश्री ने अत्यंत सरल किन्तु गहन शब्दों में बताया कि वीतरागता कोई कल्पना नहीं बल्कि जीवन जीने की कला है। कार्यशाला के दौरान मुनिश्री ने जीवन में संयम, अनुशासन और आत्मनियंत्रण को अपनाने पर विशेष बल दिया। मुनिश्री ने युवाओं को एक प्रेरणा दी कि अपने व्यक्तित्व को निखारो, स्वयं को पहचानो क्योंकि जो स्वयं को जीत लेता है वही संसार को दिशा दे सकता है। तेयुप गाँधीनगर दिल्ली की पूरी टीम ने सभी व्यवस्थाएँ सुचारु रूप से निभाईं। आधार ज्ञापन कार्यशाला संयोजक श्री वैभव सुराणा ने किया। कार्यशाला का मंच संचालन मंत्री श्री प्रकाश सुराणा ने किया।

तेरापंथ मेरा पंथ कार्यशाला और स्नेह मिलन का आयोजन

जोरावरपुरा।

तेरापंथ भवन में आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या शासन श्री बसंत प्रभाजी आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में तेरापंथ मेरा पंथ कार्य शाला ओर तेरापंथ समाज का स्नेह मिलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत तेरापंथ युवक परिषद् ने हमारे भाग्य बड़े बलवान, मिला ये तेरापंथ महान् गीतिका का संगान से किया। साध्वी बसंतप्रभा जी ने कहा हम अपने आप को सौभाग्य शाली मानना चाहिए कि हम जैन कुल में जन्म मिला और जैन कुल में भी तेरापंथ मिलना सोने पे सुहागा वाली बात है। साध्वीश्री ने फरमाया एक गाड़ी चार पहियों से चलती है वैसे ही तेरापंथ संघ में चार पहिये साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका को माना है इस संघ की एक विशिष्ट बात की एक गुरु की आज्ञा में चलने वाला संघ है गुरु आज्ञा के बिना पता भी नहीं हिलता। साध्वी श्री संकल्प श्री जी ने बताया आचार्य भिक्षु ने अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए तेरापंथ धर्म संघ की मौलिक मर्यादाओं का सृजन किया। तेरापंथ धर्म

संघ के प्रथम आचार्य भिक्षु को ने खाने को आहार, न रहने को स्थान फिर भी दृढ़ मनोबल के साथ सब विपदाओं को चीर कर तेरापंथ धर्म संघ की एक नई दिशा ओर दशा दिखाने का कार्य किया। साध्वी कल्पमाला जी ने भी एक कविता के माध्यम से अपने भाव व्यक्त किया और साध्वी रोहित यशा जी ने भी गीतिका का संगान कर अपनी भावना व्यक्त की। तेरापंथ मेरा पंथ कार्यशाला में मुख्य वक्ता राजेंद्र कुमार सेठिया गंगाशहर ओर अनुराज बैद नोखा थे।

अनुराज बैद ने दान के प्रकार और दान देने की बात की जानकारी देते हुए कहा कि दान भी दो प्रकार के होते हैं एक लौकिक दान और एक लोकोत्तर दान लौकिक दान का अर्थ है सामान्य व्यक्तियों या साधारण जरूरतमंदों को दिया जाने वाला दान, जो सांसारिक या लौकिक सुख और कल्याण से संबंधित होता है। लोकोत्तर दान का अर्थ है 'लोक से परे' या 'अलौकिक' दान, जो सांसारिक लाभ से बढ़कर आध्यात्मिक या धार्मिक हो। इसमें ज्ञान दान, संयति दान और अभय दान जैसे दान शामिल हैं। मुख्य वक्ता राजेंद्र कुमार सेठिया के

अपनी भावना को रखते हुए तेरापंथ मेरा पंथ की कार्यशाला में विस्तृत जानकारी लौकिक धर्म, लोकोत्तर धर्म, संवर, निर्जरा, दया, साध्य, साधन, संयमी, पुण्य बंध, अभयदान आदि सभी की विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि मनुष्य के पुण्य का बंध अपने आप नहीं होता है पुण्य का बंध निर्जरा से साथ ही होता है कर्मों की निर्जरा होगी तभी पुण्य कर्म का बंध होता है।

सेठिया ने तेरापंथ धर्म संघ के अनेकों उदाहरण देकर श्रावक समाज को तेरापंथ धर्म संघ की मौलिक मर्यादा और सिद्धांतों के बारे में जानकारी दी। जोरावरपुरा तेरापंथ समाज का स्नेह मिलन प्रतिभोज का भी आयोजन किया गया। समाज के सभी श्रावक समाज ने बहुत ही उत्साह और उल्लास के साथ कार्यशाला में भाग लिया। इंद्र चन्द बैद ने भी अपने भाव व्यक्त किए। महिला मंडल ने भी गीतिका का संगान किया। बाबूलाल बुच्चा ने भी कार्यशाला में शामिल होने वाले सभी महानुभाओं का मधुर शब्दों से साथ स्वागत किया। कार्यशाला का मधुर संचालन मोनिका बुच्चा ने किया।

कृतज्ञोस्मि का हुआ भव्य आयोजन

कोलकाता।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि श्री जिनेश कुमार ठाणा-3 के सान्निध्य में चतुर्मास की परिसम्पन्नता पर मंगल भावना समारोह कृतज्ञोस्मि का भव्य आयोजन भिक्षु बिहार में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा कलकत्ता - पूर्वांचल) ट्रस्ट द्वारा किया गया। इस अवसर पर विशाल संख्या में श्रद्धालुगण उपस्थित रहे। इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनिश्री जिनेश कुमार ने कहा- मनुष्य एक सामाजिक और विकसित प्राणी है। विकास के तीन सूत्र हैं। आरोग्य, बोधि और समाधि। संयम से बोधि, आरोग्य और समाधि प्राप्त होती है। संयम से अनासक्ति का विकास होता है। अनासक्ति का महत्वपूर्ण सूत्र है- पदयात्रा। साधुओं के लिए विहार चर्या को प्रशस्त बताया गया है। संत और सरिता लोक कल्याण के लिए जंगल भ्रमण करते हैं। संतों का आगमन व निर्गमन दोनों ही मंगलकारी होते हैं। संतों का आगमन जहां क्षेत्र के

लिए सौभाग्य का सूचक होता है, वहीं प्रस्थान विश्व बंधुत्व का भाव लिए हुए होता है। संतों को एक स्थान पर रोककर नहीं रखना चाहिए कहावत भी है- बहता पानी निर्मल पड़ा गंदीला होय! साधु तो रमता भला, दाग न लागे कोय- जिस प्रकार बहता पानी निर्मल व स्वच्छ होता है, पड़ा हुआ पानी गंदा और दुर्गन्ध युक्त बन जाता है जिससे अनेक बीमारियों की संभावना रहती है उसी प्रकार सन्त विचरण करते हुए ही अच्छे लगते हैं। मंगल भावना समारोह विनयशीलता, ग्रहणशीलता प्रमोदभावना का सूचक है। चार महीने तक अध्यात्म की गंगा बही, लोगों ने भरपूर लाभ उठाया। हमारी विदाई सद्गुणों की नहीं, अवगुणों की विदाई देना है। मोमबती की तरह स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाशित करें। केश की तरह कोमल, सुई की तरह जोड़ने का कार्य मधु व्यवहार से करते हुए दर्पण की तरह उज्ज्वल रहते हुए स्वयं का आत्मनिरीक्षण कर भवसमुद्र से मुक्त होने का प्रयास करना चाहिए।

इस अवसर पर मुनिश्री परमानंद ने कहा- श्रावक समाज का उत्साह चतुर्मास

की सफलता का प्रतीक है। संतों का आगमन और विहार दोनों मंगलकारी होते हैं। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि श्री कुणाल कुमार के मंगलाचरण से हुआ। इस अवसर पर तेरापंथी महासभा के पूर्व अध्यक्ष सुरेश गोयल, वरिष्ठ पत्रकार प्रकाश चण्डालिया, कलकत्ता सभा के अध्यक्ष अजय भंसाली पूर्वांचल सभा के अध्यक्ष संजय सिंधी तथा मुख्य न्यासी बाबूलाल गंध, अणुव्रत समिति अध्यक्ष अध्यक्ष नवीन दुगड़, तेरापंथ युवक परिषद्, पूर्वांचल अध्यक्ष राजीव बोधरा, तेरापंथ महिला मंडल, पूर्वांचल अध्यक्ष बबीता तातेड़, तेरापंथ प्रोफेशनल पूर्वांचल के पूर्व अध्यक्ष विनोद दुगड़, प्रेक्षा फाउंडेशन से सुधा बैंगानी, किशोर मंडल संयोजक कौशल चोरडिया, कन्या मण्डल संयोजिका मोनिका भादानी ने अपने विचार रखते हुए मंगलभावना व्यक्त की। जैन कला संगम, पूर्वांचल स्वरलहरी, तेरापंथ महिला मंडल ने सुमधुर सामूहिक गीतों से मंगल भावना व्यक्त की। आधार ज्ञापन पंकज डोसी ने व मंच संचालन संगठन मंत्री हंसमुख मूथा ने किया।

मासखमण तप अनुमोदना पर भक्ति संध्या का आयोजन

दुबई।

आचार्य श्री महाश्रमण जी की विदुषी शिष्याएँ डॉ. समणी मंजु प्रज्ञा जी और समणी स्वर्ण प्रज्ञा जी के सान्निध्य में तथा अजमान सभा के तत्वाधान में, तपस्विनी नवनीता राकेश पटावरी एवं वर्षीतप तपस्वी दिनेश कोठारी की अनुमोदना के पावन अवसर पर एक दिव्य ऑनलाइन भक्ति संध्या का आयोजन जूम प्लेटफॉर्म के माध्यम से किया गया। जो पटावरी के घर रखा गया था। इसमें लगभग 200 लोग जूम पर जुड़े और लाभ लिया। कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रमोद भंसाली, अनु बाफना ने बड़ी सुंदरता और गरिमा के साथ किया।

कार्यक्रम में देशभर से जुड़े भक्ति प्रेमियों और भजन गायक-गायिकाओं ने अपनी मनमोहक प्रस्तुतियों से वातावरण को भक्तिरस में डुबो दिया। संध्या की शुरुआत मधुर भजन से हुई, जिसके पश्चात् एक से बढ़कर एक

प्रस्तुतियों ने सभी का मन जीत लिया। कार्यक्रम का प्रारंभ नवनीता की पोती सानवी नाहटा ने किया।

इस पावन अवसर पर अनुराग जैन, बबीता गुनेचा, अनिल गोखरू, अमित कांकरिया, मीनाक्षी भूतोड़िया और प्रकाश डाकलिया, भंवर डाकलिया दोनों समणीजी का मंगल उद्बोधन मिला। कमल सेठिया, ऋषि दुगड़, नीलेश बाफणा खुशबू गांधी मेहता, महेन्द्र सिंघवी, कमल छाजेड़, संजय भानावत, हेमलता पिपाड़ा, शिल्पा बैद आदि ने अपनी सुन्दर एवं संघ प्रभावक प्रस्तुतियाँ दी। कार्यक्रम का संचालन प्रसिद्ध कवि प्रमोद भंसाली ने किया। अपनी आत्मीय स्वर लहरियों से तपस्वियों को अनुमोदना अर्पित की। कार्यक्रम में सभी ने मिलकर तपस्वियों के तप, संयम और साधना की सराहना करते हुए उन्हें शुभकामनाएँ दीं। भक्ति, श्रद्धा और आत्मिक आनंद से ओतप्रोत यह संध्या सभी के लिए एक यादगार आध्यात्मिक अनुभव बन गई।

कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला का आयोजन

किलपाँक, चेन्नई।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के अंतर्गत सी पी एस एकेडमी फॉर लीडरशिप एंड एक्सीलेंस के तत्वाधान में मुनि श्री मोहजीतकुमार ठाणा 3 के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद्, किलपाँक द्वारा कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग की 7 दिवसीय कार्यशाला स्पीकिंग स्किल्स, वेलकम स्पीच, स्टेज प्रोटोकॉल, चीफ गेस्ट का स्वागत, टीम वर्क, लीडरशिप क्वालिटी जैसी कलाओं में निपुणता प्रदान करने हेतु आयोजित हुई।

कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग जोनल ट्रेनर दिव्या जैन, जोनल ट्रेनर आकाश शाह और प्रोविजनल नेशनल ट्रेनर नूतन लोढ़ा कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग वर्कशॉप के ट्रेनर्स रहे। कार्यशाला का दीक्षांत समारोह अभातेयुप राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री रोहित कोठारी की अध्यक्षता में आगाज हुआ। मुनिश्री के नमस्कार महामंत्र समुच्चारण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। विजय गीत

का संगान तेयुप किलपाँक कार्यकारिणी सदस्यों ने किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन अभातेयुप निवर्तमान अध्यक्ष एवं समारोह के मुख्य अतिथि श्री रमेश डागा ने किया। तेयुप किलपाँक अध्यक्ष श्री राकेश डोसी ने सभी का स्वागत किया। इस सीपीएस कार्यशाला में 45 से अधिक संभागीयों ने रजिस्ट्रेशन किया और उनमें से 36 से अधिक संभागीयों ने विभिन्न विषयों पर अपनी प्रस्तुति दी एवं सभी ने कार्यशाला के अनुभवों को साझा किया। पावन पाथेय प्रदान करते हुए मुनिश्री मोहजीतकुमार ने कहा कि 'बोलने की कला के साथ-साथ लिखने की कला का भी अभ्यास आवश्यक है, जिससे दोनों कौशलों का समान रूप से विकास हो सके।' मुनि श्री जयेशकुमार ने भी विचार व्यक्त किए। सभी प्रतिभागियों को मेडल एवं सर्टिफिकेट द्वारा सम्मानित किया गया। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागी रहे- निधि अशोक जैन, कीर्तिश्री सेठिया, काशिश जैन, हितेश बम्बोली, प्रीति धोका, सुयश सुराणा और अंकिता धोका। मुख्य अतिथि अभातेयुप

के निवर्तमान अध्यक्ष रमेश डागा एवं विशिष्ट अतिथि युवा गौरव विजय सुराणा, अभातेयुप सीपीएस एकेडमी राष्ट्रीय प्रभारी दिनेश मरोठी, अभातेयुप पूर्वाध्यक्ष गौतम डागा, अभातेयुप से युवावाहिनी - सत्कार राष्ट्रीय सहप्रभारी संदीप मुथा, कोमल डागा, विकास कोठारी, अरुण परमार, संतोष सेठिया, तेयुप किलपाँक के अध्यक्ष राकेश डोसी, मंत्री सुनील सकलेचा, उपाध्यक्ष सुयेश सुराणा, सहमंत्री अभिषेक नाहर, किलपाँक परिषद कार्यकारिणी सदस्य, किलपाँक सभाध्यक्ष अशोक परमार, किलपाँक महिला मंडल अध्यक्षा अनीता सुराणा, अखिल भारतीय महिला मंडल कार्यकारिणी सदस्या माला कातरेला, अणुव्रत समिति उपाध्यक्ष स्वरूप चन्द दौंती एवं अनेक गण्यमान्य व्यक्तियों की गरिमामय उपस्थिति रही। इस कार्यशाला को सफल बनाने में सहमंत्री एवं संयोजक श्रीमंत दुधोड़िया, संगठन मंत्री एवं संयोजक गजेंद्र गादिया का सराहनीय श्रम रहा। आभार ज्ञापन तेयुप किलपाँक मंत्री सुनील सकलेचा ने दिया।

जीवन में उतार-चढ़ाव तो आते हैं उनसे घबराएं नहीं

सूरत।

सफलतम सूरत चातुर्मास प्रवास के पश्चात् तेरापंथ भवन, सिटीलाइट से अपनी सहवर्तिनी साध्वियों के साथ मृगसर कृष्णा प्रतिपदा को प्रातः सूर्योदय के साथ ही विहार कर दिया। लग रहा था पूरा सूरत श्रावक परिवार उन्हें शुभकामनाएं देने उपस्थित हो गया। विहार से पूर्व उपस्थित श्रद्धालुओं को साध्वी श्री ने मंगल पाठ का श्राव्य करवाया। विहार के पश्चात प्रथम पड़ाव धरम पेलेस, पारले पॉइंट स्थित किशनलाल, कमला मादरेचा परिवार के निवास स्थान पर किया। जहाँ विहार यात्रा का विशाल जुलूस धर्मसभा में परिवर्तित हो गया। उपस्थित विशाल जन समुदाय को प्रतिबोधित करते हुए प्रो. साध्वी श्री मंगलप्रज्ञा ने कहा- प्रवेश और प्रस्थान जिन्दगी में होता ही रहता है। लगभग चार महीने पूर्व हमने तेरापंथ भवन में चातुर्मास के लिए प्रवेश किया था। अब हमारा प्रस्थान हो रहा है। हर श्रावक प्रेरणा लें कि जिन्दगी में आने वाले उतार-चढ़ाव में संतुलन रखें। परिस्थितियों से घबराएं नहीं। आत्मविश्वास को जीवित रखने वाला आगे बढ़ जाता है। साध्वी मंगल

प्रज्ञा जी ने कहा- आज सूरत का श्रावक श्राविका परिवार हमारे मंगल विहार में साथ चल रहा था, उनकी श्रद्धा भक्ति बोल रही थी। तेरापंथ संघ के श्रावक-श्राविकाएं शक्तिशाली स्तम्भ हैं। हमें सौभाग्य से आचार्य महाश्रमण जी का नेतृत्व आधार मिला है, उनके प्रति हमारी भक्ति रूपी शक्ति निरंतर बढ़ती रहे। जीवन का हर पल उनके प्रति समर्पित रहे। विशेष प्रेरणा प्रदान करते हुए उन्होंने कहा- विनय वात्सल्य की परम्परा घर-परिवारों में प्रवेश हो यह आवश्यक है। सौहार्द-प्रेम से वातावरण आनन्दमय बन जाता है। हर व्यक्ति 'आनन्दो मे वर्षति वर्षति' की भावना करे, अनुप्रेक्षा करे। चित्त चैतन्य में आनन्द की वर्षा होती रहे।

साध्वी वृन्द ने- 'सुणता ही रेवां प्रगति री गाथावां' गीत का संगान कर श्रावक परिवार के प्रति आध्यात्मिक शुभकामना दी। किशनलाल मादरेचा, कमला मादरेचा ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किया। सम्पूर्ण श्रावक परिवार ने एक स्वर में शुभकामनाएं और कृतज्ञभाव प्रस्तुत किए। तेरापंथ सभा मंत्री महेन्द्र गांधी मेहता ने सम्पूर्ण श्रावक समाज की ओर से मंगलकामनाएं व्यक्त की।

मंगल भावना समारोह का भव्य आयोजन

सिकन्दराबाद।

साध्वी डॉ. गवेषणाश्री के सफलतम उपलब्धिपूर्ण चातुर्मास की सानन्द सम्पन्नता पर भाग्यनगर वासियों द्वारा मंगल भावना समारोह का आयोजन किया गया। तेरापंथ सभा के तत्वाधान में आयोजित इस समारोह में उपस्थित विशाल जन मेदिनी को सम्बोधित करते हुए साध्वी डॉ. गवेषणाश्री ने कहा- आज हमें आत्मिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। हमारा भाग्यनगर में चातुर्मासिक आध्यात्मिक प्रवास सफल सुफल रहा।

यह सफलता परम पावन गुरु कृपा का प्रसाद है। गुरु का आशीर्वाद गुरु की ऊर्जा और गुरु शक्ति ही हमारे लिए श्रेयस्कर है। साध्वी श्री ने कहा हैदराबाद में हमारा 9 महीने का प्रवास संपन्न हुआ है। अब हमारा प्रस्थान एक निर्देशानुसार, गुरु दिशा में हो रहा है, इस बात की अपार प्रसन्नता है। भाग्यनगर का सम्पूर्ण श्रावक समाज श्रद्धा समर्पण भावना से समृद्ध है। तेरापंथ का विनीत श्रावक समाज मिला यह भी हमारा सौभाग्य है। जिनमें गुरु-भक्ति, संघ-भक्ति घनीभूत है।

साध्वी श्री ने कहा- सिकन्दराबाद में आयोजित इस चातुर्मास में मुख्य दायित्व, तेरापंथी सभा, सिकन्दराबाद का रहा है। सभा के अध्यक्ष सुशील संचेती मंत्री हेमंत संचेती एवं उनकी पूरी टीम ने अपना दायित्व बखूबी निभाया है। वे धीर, गंभीर और शांत प्रकृति के व्यक्ति हैं। सम्पूर्ण टीम कार्यकारी है। जैन वेलफेयर सोसाइटी, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, अणुव्रत समिति, किशोर मंडल, कन्या मंडल, ज्ञानशाला परिवार आदि सभी संस्थाओं ने हर कार्यक्रम को उत्साह के साथ सम्पादित किया।

इसी प्रकार सभी संस्थाएं संघ विकास के लिये अपनी सृजन चेतना का उपयोग करती रहे। गुरु इंगित की आराधना, संघ मर्यादा और अनुशासन की विशेष अनुपालना करें। यही हमारी आध्यात्मिक मंगल कामना है। साध्वी श्री ने विविध रूप में सेवा करने वाले श्रावक-श्राविकों का नामोल्लेख करते हुए उनकी सेवाओं का उल्लेख किया। मंगलभावना के क्रम में महिला मंडल हैदराबाद द्वारा ने मंगल गीत एवं नाटिका प्रस्तुत की गई। जैन तेरापंथ

वेलफेयर सोसायटी से बाबुलाल जी बैद, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद उपाध्यक्ष अभिनंदन नाहटा, महासभा कार्यकारिणी सदस्य अशोक नाहटा, तेरापंथ महिला मण्डल अध्यक्षा नमिता सिंधी निवर्तमान अध्यक्ष कविता आच्छा, सरला पी भुतोड़िया, प्रियदर्शनी जैन, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष राहुल गोलछा, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम अध्यक्ष वीरेंद्र घोषल अणुव्रत समिति अध्यक्ष राजेंद्र बोथरा, तेरापंथी सभा के मंत्री हेमंत संचेती, ज्ञानशाला से अंजु बैद, सम्पत नौलखा, निर्मला बैद, विमलेश सिंधी, चांद बैद, चंद्रा सुराणा, सुशीला मोदी, राजकुमार सुराणा, महावीर चंद बाफना, चेतन मरलेचा, कविता बांठिया, खुशाल भंसाली, मीडिया प्रभारी मीनाक्षी सुराणा, किशोर मंडल, ने साध्वी श्री के चातुर्मास की ऐतिहासिक बताते हुए आगामी विहार के प्रति मंगल कामना की। कन्यामंडल ने गीतिका की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला परिवार के साथ ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने गीतिका की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन महासभा प्रतिनिधि और तेरापंथी सभा के परामर्शक लक्ष्मीपत जी बैद ने किया।

थायराइड जाँच मशीन का हुआ लोकार्पण

नोखा।

तेरापंथ युवक परिषद नोखा के सौजन्य से ATDC (बाहेती आई हॉस्पिटल बेसमेंट) में जैन संस्कार विधि के अंतर्गत HB1C एवं थायराइड जाँच मशीन का लोकार्पण किया गया। जैन संस्कारक इंद्रचन्द्र बैद, गोपाल लुणावत एवं हंसराज भूरा ने जैन संस्कार विधि अनुसार शुभारंभ किया तथा अधिकाधिक कार्यक्रम जैन विधि द्वारा आयोजित करने का आह्वान किया। यह मशीनें भंवरलाल जी शरद कुमार जी संदीप कुमार जी अमित कुमार जी बैद (नोखा-कोलकाता-भुवनेश्वर) द्वारा प्रदान की गई हैं। इस पुनीत कार्य हेतु प्रेरणा हंसराज भूरा द्वारा दी गई। इन मशीनों के स्थापित होने से अब नोखा क्षेत्र में मधुमेह एवं थायराइड संबंधी जाँच सुविधाएँ न्यूनतम दरों पर स्थानीय स्तर पर ही उपलब्ध हो सकेंगी। इस अवसर पर अभातेयूप सदस्य विपुल पारख एवं आभातेयूप प्रवृत्ति सलाहकार प्रकाश

छाजेड़ नोखा पधारे और कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम में तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष निर्मल चोपड़ा, मंत्री सुरेश बोथरा, उपाध्यक्ष अभिषेक भूरा, महावीर मालू एवं संदीप चोरडिया सहित परिषद के पदाधिकारी, गणमान्य सदस्य एवं महिला मंडल की उपस्थिति रही। सभा अध्यक्ष शुभकरण चोरडिया, सभा पूर्व अध्यक्ष निर्मल भूरा एवं सभा मंत्री मनोज घीया ने कहा कि समाज सेवा के क्षेत्र में यह पहल, स्वास्थ्य सुविधाओं को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण सिद्ध होगी। ATDC प्रभारी रूपचंद बैद ने सभी सहयोगी दाताओं का हृदय से आभार व्यक्त किया। इस दौरान अणुव्रत समिति मंत्री गजेंद्र पारख, महावीर नाहटा, सुरेश भूरा, ऋतिक बुच्चा सहित अनेक सदस्य उपस्थित रहे। महिला मंडल से मंजू बैद, सुमन मालू, मोनिका बैद एवं पुष्पा देवी पारख ने भी सक्रिय सहभागिता निभाई। कार्यक्रम के समापन पर निर्मल चोपड़ा ने सभी अतिथियों का सम्मान एवं धन्यवाद ज्ञापित किया।

मंगल भावना सफलतम चतुर्मास की परिसंपन्नता

जसोल।

आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वीश्री रतिप्रभा का मंगलभावना समारोह पुराणा ओसवाल भवन के सभागार में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ महाश्रमण अष्टकम के द्वारा तेरापंथ महिला मंडल ने किया। साध्वीश्री रतिप्रभा विशाल जनभेदनी को संबोधित करते हुए कहा चतुर्मास सफल कैसे हो? ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप की विशिष्ट साधना हो, जो पाया उसका संरक्षण एवं आगे संवर्धन करें। हर चतुर्मास में कुछ नया पाने का संकल्प करें। एक कदम भी बढ़े पर बढ़े जरूर तो चतुर्मास के समय का उपयोग हो सकेगा। अध्यात्म की धरती पर नव - नव रंग भरें। गुरु के इंगितानुसार चलने वाला अपने जीवन में जरूर सफल होते हैं। हमने भी इस चतुर्मास को सफल बनाने का प्रयत्न किया और गुरु कृपा से हमें सफलता मिली। भाई बहिनो ने इस पावस को सफलतम बताया। इसमें हम दोनों का ही श्रम बोल रहा था। एक तरफ से सफलता कभी भी नहीं मिलती। जागरूकता, श्रद्धा नये पाने की ललक से

चतुर्मास में नव रंग आता है। जसवल धरा उर्वरा भूमि है, वीर भूमि है, साताकारी क्षेत्र है, छोटा क्षेत्र परन्तु श्रद्धा के रंग से रंगा हुआ है। आगे भी धर्म जागरूकता चलती, आत्मा के उत्थान के उपक्रम चलता रहे। साध्वीश्री कलप्रभा ने कहा तपस्या के क्षेत्र में इस बार भाई बहिनो ने मानो झड़ी ही लगा दी है। साध्वीश्री मनोज्ञयशा ने कहा मंगलभावना से मंगल ही मंगल होता है। साध्वीश्री पावनयशा ने अपनी जन्मभूमि में मुझे पहला चतुर्मास करने का सौभाग्य मिला और जो मेने मांग की की तपस्या से मेरी खोल भरायें और भाई बहिनो ने इसमें बहुत अच्छा उत्साह दिया और कर्म निर्जरा के भागी बनाया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा अध्यक्ष भूपतराज कोठारी, ज्ञानशाला प्रभारी इंंगरचन्द्र सालेचा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष महावीर सालेचा, परमाधिक शिक्षण संस्थान संयोजक मोतिलाल जीरावला, धनराज तातेड़, उषभराज तातेड़, महेंद्र तातेड़, आदि के द्वारा साध्वीश्री जी खूब अच्छा श्रम करके हर दृष्टि से चतुर्मास को सफलतम बनाने का प्रयास किया। कार्यक्रम का सफल संचालन संपतराज चौपड़ा ने किया।

दर्शन कार्यशाला का आयोजन

राजराजेश्वरी नगर।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के पावन निर्देशानुसार भिक्षु चेतना वर्ष में आराध्य को ज्ञानात्मक श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु साध्वी श्री पुण्ययशा के सान्निध्य एवं महासभा के तत्वावधान में तेरापंथी सभा, राजराजेश्वरी नगर द्वारा तेरापंथ दर्शन कार्यशाला का आयोजन किया गया। साध्वीजी के मुखारविन्द से नमस्कार महामंत्र एवं भिक्षु जप से कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। साध्वी जी ने श्रावकों की अनेक जिज्ञासाओं का समुचित समाधान किया तथा कहा आचार्य भिक्षु के विचार आज भी प्रासंगिक हैं। आवश्यकता है उन्हें गहराई से जानकर-समझकर ग्रहणकर अपनाने की। स्वामीजी ने धर्मसंघ में जिन मर्यादाओं और अनुशासन

का बीजारोपण किया उसी का परिणाम है कि आज तेरापंथ अन्यो के लिए मिसाल बन गया है। चेन्नई से पधारे प्रशिक्षक प्रवक्ता उपासक श्री पदमचंद आंचलिया ने सभी बिन्दुओं को स्पर्श करते हुए धर्म की कसौटी एवं धर्म करने का अधिकारी कौन विषयों का विस्तृत विश्लेषण किया। उन्होंने बताया कि सब जीवों में मनुष्य जीवन श्रेष्ठ है क्योंकि उसमें ही मोक्ष जाने की योग्यता है। मनुष्य में त्याग मूलक प्रवृत्ति एवं चिंतन करने की क्षमता है। दान एवं दया के लौकिक-लोकोत्तर दोनों पक्षों को विस्तार से समझाया।

उन्होंने कहा आचार्य भिक्षु ने कभी भी दान का निषेध नहीं किया किन्तु लौकिक-लोकोत्तर की भेद रेखा को स्पष्ट किया। हृदय परिवर्तन में धर्म है, बल प्रयोग अथवा प्रलोभन में नहीं। श्रावक निष्ठा

पत्र का वाचन उपासिका मधु कटारिया द्वारा करवाया गया। सभाध्यक्ष राकेश छाजेड़ ने समागत का स्वागत करते हुए इस आयोजन के महत्व पर प्रकाश डाला। साध्वी वर्धमानयशा ने आचार्य भिक्षु एवं तेरापंथ के उद्भव पर जानकारी दी। साध्वी श्री बोधिप्रभा ने तेरापंथ धर्मसंघ की मूर्तिपूजा संबंधित सटीक जानकारी प्रस्तुत की तथा जनमानस में व्याप्त शंकाओं का निवारण किया।

प्रवक्ता उपासिका कंचन छाजेड़ ने दान एवं दया तथा उपासिका लता बाफणा ने मर्यादा तथा व्यवस्था विषय पर प्रस्तुति दी। मंच संचालन कार्यशाला संयोजक उपासिका सरोज आर बैद ने किया। सभा के मंत्री गुलाब बाँठिया ने आभार व्यक्त किया, मंगलपाठ द्वारा कार्यक्रम सानंद संपन्न हुआ।

युवा सम्मेलन ऊर्जा का भव्य आयोजन

पूर्वांचल कोलकाता।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनिश्री जिनेश कुमार ठाणा-3 के सान्निध्य में पश्चिम बंगाल स्तरीय युवा सम्मेलन 'ऊर्जा' का भव्य आयोजन भिक्षु विहार में तेरापंथ युवक परिषद, पूर्वांचल द्वारा किया गया। सम्मेलन में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष पवन मांडोत, वरिष्ठ उपाध्यक्ष अनंत बागरेचा महामंत्री सौरभ पटावरी कोषाध्यक्ष विकास बोथरा विशेष रूप से उपस्थित थे। विभिन्न सत्रों में मुख्य वक्ता के रूप में धनंजय बाँठिया कनक पींचा, रेडियो जाँकी के रूप में मशहूर आर. जे. प्रवीण उपस्थित रहे।

इस अवसर पर अभातेयूप सलाहकार नवीन बैंगानी, सुनील दुगड़, अभातेयूप बंगाल परिवार से संदीप डागा, सुमित छाजेड़, जय चौरडिया, दीपचंद पुगलिया, राजीव बोथरा, आदित्य संचेती, अमित तातेड़, हर्ष दुगड़ की गरिमामय उपस्थिति रही। इस अवसर पर उद्घाटन सत्र में उपस्थित विशाल परिषद को संबोधित करते हुए मुनिश्री जिनेश कुमार ने कहा युवा अवस्था जीवन की स्वर्णिम अवस्था है। युवा बाल सुलभ चपलता और वृद्धत्व की अक्षमता इन दो तटों के बीच बहने वाला प्रवाह है, जो कभी तूफान की भाँति और कभी सहजता से बहता रहता है। युवावस्था में चिन्तन के स्रोत खुल जाते हैं। विवेक जागृत हो जाता है और कर्म

शक्ति निखार पा लेती है। युवा समाज का यथार्थ बिम्ब है। वह शक्ति का प्रतीक व ऊर्जा का पुंज है। युवा सृजन का देवता व ऊर्जा का भंडार है। युवा उत्साह का पर्याय और देश की तकदीर है। युवा वह प्रचण्ड स्रोत है जो चट्टान को चूर कर कर अपना पथ निर्मित कर लेता है। मुनिश्री जिनेश कुमार ने आगे कहा- आज पश्चिम बंगाल स्तरीय युवा सम्मेलन का आयोजन हो रहा है। तेरापंथ युवक परिषद् सेवा, संस्कार व संगठन के क्षेत्र में काम करती है। युवाओं को ऊर्जावान बनने के लिए आचार्य तुलसी द्वारा प्रदत्त पंचशील का विकास करना चाहिए। इस अवसर पर मुनिश्री कुणाल कुमार ने सुमधुर गीत का संगान किया।

उद्घाटन सत्र का शुभारंभ सामूहिक जप से हुआ। उपस्थित शाखा परिषदों के अध्यक्ष मंत्रियों द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करते हुए सम्मेलन के शुभारंभ की घोषणा अभातेयूप के अध्यक्ष पवन मांडोत ने की। इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत ने अभातेयूप के विभिन्न आयामों की चर्चा करते हुए अपने वक्तव्य के माध्यम से युवाओं में एक नई ऊर्जा पैदा कर दी। इस अवसर पर उपाध्यक्ष प्रथम अनंत जी बागरेचा, महामंत्री सौरव जी पटावरी में प्रबुद्ध विचारक नवीन जी बैंगानी, पूर्वांचल सभा अध्यक्ष संजय जी सिंघी, दिनेश जी गोयल ने अपने विचार व्यक्त किए। स्वागत वक्तव्य तेरापंथ युवक परिषद्,

पूर्वांचल के अध्यक्ष राजीव बोथरा ने दिया। उद्घाटन सत्र का संचालन मुनिश्री परमानंद कुमार जी ने किया। प्रशिक्षण सत्र का शुभारंभ श्रीमती पूनम बुरड़ व सुश्री चांदनी गेलड़ा के मंगलाचरण से हुआ। मोटिवेशनल स्पीकर श्री धनंजय बाँठिया ने कैसे बने युवा धर्मसंघ के प्रति ऊर्जावान विषय पर युवाओं को प्रशिक्षण प्रदान दिया। मुनिश्री जिनेश कुमार ने आशीर्वचन प्रदान किया। संचालन तेयुप पूर्वांचल के मंत्री सिद्धार्थ दुधेडिया में लिया। दोपहर में ऊर्जा सत्र आयोजित हुआ। मंगलाचरण अक्षज बोथरा व हर्षित मालू ने किया। अभातेयूप के कोषाध्यक्ष विकास बोथरा, श्री कनक जैन पींचा, आर जे, प्रवीण ने अपने-अपने विषयों पर युवाओं का मार्गदर्शन किया। इस सत्र का संचालन विनीत नौलखा ने किया। इस अवसर पर अतिथियों तथा पश्चिम बंगाल से सम्मेलन में उपस्थित हुई परिषदों का तेयुप पूर्वांचल द्वारा सम्मान किया गया। इस अवसर पर तेयुप पूर्वांचल के अध्यक्ष राजीव बोथरा का पदोन्नति करते हुए क्षेत्रीय सहयोगी के रूप में मनोनीत की घोषणा हुई। इस सम्मेलन में पश्चिम बंगाल की शाखा परिषदों में पूर्वांचल, साउथ कोलकाता साउथ हावड़ा, उत्तर हावड़ा, कोलकाता मैन, टॉलीगंज, बेहाला, उत्तर कोलकाता, लिलुआ, हिंदमोटर, सिलिगुड़ी, सैथिया, मुर्शिदाबाद, फ़ालाकाटा, माथाभांगा दिनहट्टा से लगभग 250 से अधिक युवको ने भाग लिया।

ONE DAY MONK कार्यक्रम का आयोजन

सिकंदराबाद।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की विदुषी सुशिष्या साध्वी श्री डॉ. गवेषणा श्री (ठाणा 4) के पावन सानिध्य में तेरापंथ महिला मंडल के तत्वाधान में तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा ONE DAY MONK का कार्यक्रम तेरापंथ भवन डी वी कॉलोनी में आयोजित किया गया। प्रभारी रूबी दुगड़ एवं सह प्रभारी शिल्पा सुराणा के द्वारा प्रतिक्रमण करवाया गया। प्रतिक्रमण के पश्चात साध्वी श्री दक्षप्रभा द्वारा पच्चीस बोल एवं साधारण ज्ञान की कक्षा ली गई।

साध्वी डॉ. गवेषणा श्री ने सभी को यह बताया की किस तरह उनके मन में दीक्षा के भाव उत्पन्न हुए। अगले दिन सभी कन्याओं ने अपने दिन की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से किया उसके बाद प्रेम संचेती एवं डिंपल बैद द्वारा प्रेक्षा

ध्यान का योग करवाया गया। डॉ. मेहता द्वारा सभी के लिए एक सत्र आयोजित किया गया। उन्होंने सभी को हमारे शरीर के सात चक्रों के बारे में बताया। हर चक्र का रंग, स्थान, महत्वपूर्णता एवं उसे नमस्कार महामंत्र से कैसे ठीक किया जा सकता है उसके बारे में संक्षिप्त में बताया।

डॉ. श्वेता मेहता का सत्र आयोजित किया गया जिसमें फूड, हैल्थ एंड न्यूट्रिशन की जानकारी दी गई। उन्होंने सभी से अपना 10 साल का अनुभव एवं कई महिलाओं की बीमारियों के बारे में बताया और सभी कन्याओं को जागरूक किया।

सभी कन्याओं ने अपने शरीर एवं स्वास्थ्य के अनुसार उनसे प्रश्न पूछकर उसका समाधान कैसे किया जा सकता है समझा, साथ ही उन्होंने सभी को अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखने की राय दी।

इस प्रकार सभी कन्याओं ने एक दिन महाराज बनकर आध्यात्मिक शांतिपूर्ण जीवन जीने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। दीक्षा के बाद जीवन कैसा होता है उसका अनुभव भी किया।

सभी कन्याओं को बहुत आनंद आया और कम से कम चीजों में कैसे जीवन गुजारा जा सकता है इसका भी अनुभव करवाया गया। कार्यक्रम का समापन मंगल पाठ एवं नमस्कार महामंत्र से किया गया। इस कार्यक्रम में वेदिका भंसाली, गुनिका भंसाली, श्रेया बैद, यशा बुच्चा, पूजा गोलछा, पूर्वी सेठिया, खुशी आंचलिया ने भाग लिया जो वन डे मोंक बनीं। इस कार्यक्रम महिला मंडल मंत्री निशा सेठिया, संतोष गुजराणी, ज्योति भूतोडिया, निशा दुगड़, सपना हिरावत, पायल पारख, मीनाक्षी आंचलिया का विशेष सहयोग रहा एवं सभी सभा संस्था का विशेष सहयोग रहा।

मंगल भावना समारोह का आयोजन

गुवाहाटी।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी के प्रबुद्ध सुशिष्य मुनि श्री डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार ठाणा-2 एवं मुनि श्री रमेश कुमार ठाणा-2 के गुवाहाटी की सफलतम चातुर्मासिक परिसंपन्नता पर स्थानीय तेरापंथ धर्मस्थल में मंगल भावना समारोह का आयोजन किया गया। मुनि डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि श्रावक समाज से कहा कि योगी की तरह जीएं एवं धर्मसंघ के लिए उपयोगी बने रहें। उन्होंने कहा कि गुवाहाटी श्रावक समाज की सेवा भावना प्रशंसनीय है। मुनि श्री रमेश कुमार ने कहा कि गुरुकृपा से गुवाहाटी का ऐतिहासिक चातुर्मास सम्पन्न हो रहा है। चातुर्मास का समय आत्मजागरण का होता है। चार महीने अध्यात्म की गंगा अविरल बहती रही। तप-त्याग से

हमारा जीवन महान बनता है। गुवाहाटी में इस वर्ष त्याग का नया रिकार्ड बना एवं 111 बड़ी तपस्याएं हुई हैं। मुनि श्री पद्म कुमार एवं मुनि श्री रत्न कुमार ने भी प्रेरक उद्बोधन प्रदान किया। इस मौके पर महासभा के उपाध्यक्ष श्री विजय कुमार चोपड़ा व श्री बसंत कुमार सुराणा एवं पूर्वोत्तर भारत स्तरीय श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री बजरंग कुमार सुराणा, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष बाबूलाल सुराणा, महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती सुशीला मालू, मंत्री सुचित्रा छाजेड़ एवं विदाई गीत, अभातेमम की परामर्शक श्रीमती रंजू खटेड़ एवं कार्यकारिणी सदस्य श्रीमती सुनीता गुजरानी, तेयुप मंत्री श्री हितेश चोपड़ा व निवर्तमान अध्यक्ष सतीश कुमार भादानी, टीपीएफ अध्यक्ष श्री पंकज भूरा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष श्री संजय चौरडिया,

एटीएमआरएफ के अध्यक्ष विजयराज डोसी, अणुविभा कार्यकारिणी सदस्य श्री बजरंग बैद, ज्ञानशाला परिवार, किशोर मंडल, कन्या मंडल संयोजिका कीर्तिका घोड़ावत, अर्हम् भजन मंडली, तेरापंथ आध्यात्मिक भजन मंडली शांतिपुर, मॉनिंग वॉक ग्रुप के अजय भंसाली, अशोक कुमार बोरड़, झनकार दुधोडिया, मनीष कुमार सिंधी, रितेश खटेड़, सुश्री प्रेरणा घोड़ावत, सुरेश सुराणा, आस्था संचेती, उपासक अशोक सुराणा आदि ने वक्तव्य, गीतिका आदि के माध्यम से अपनी भावनाएं व्यक्त की। तेरापंथी सभा की ओर से कंठी तप साधक श्री प्रतीक बोथरा की अनुमोदना की गई। कार्यक्रम का संचालन सभा के सहमंत्री अशोक कुमार बोरड़ एवं वरिष्ठ कार्यकर्ता राजेश जमड़ ने किया। आभार ज्ञापन तेरापंथी सभा के मंत्री राजकुमार बैद ने किया।

पृष्ठ 2 का शेष

अणुव्रत के छोटे-छोटे...

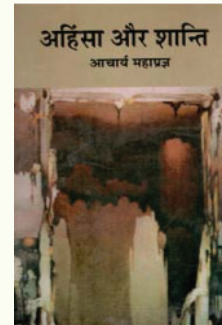
जो व्यक्ति अपने गुरु का दर्शन करता है क्या अपने गुरु द्वारा प्राप्त अमृत मय मार्गदर्शन को प्राप्त कर जीवन में अमरत्व को प्राप्त कर लेता है। इसी प्रकार के अमृत वचनों की वर्षा परम पूज्य गुरुदेव कर रहे हैं, जिससे आकर्षित होकर हर जगह इतना जन समूह अमृत वाणी के रसपान के लिए

उमड़ रहा है। तत्पश्चात् आचार्यश्री ने विद्यार्थियों को मंगल प्रेरणा प्रदान की। परमार परिवार की ओर से श्री सुगनराज परमार ने अपनी अभिव्यक्ति दी। परमार परिवार की बहू-बेटियों ने गीत की प्रस्तुति दी। जैन संघ मगरतालाब की ओर से श्री सुगनराज परमार, विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री चंदन सिंह ने अपनी अभिव्यक्ति दी। खिंवाड़ा की

श्रीमती रेखा खटेड़ ने आचार्य प्रवर से 31 तपस्या का प्रत्याख्यान किया। आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में पहुंची साध्वी त्रिशला कुमारीजी ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते हुए सहवर्ती साध्वियों के साथ गीत का प्रस्तुति दी। स्थानीय मगरतालाब के सकल जैन समाज ने सामूहिक रूप में वंदन किया।

बोलती किताब

अहिंसा और शांति



साधन के बिना साध्य को पाने की आकांक्षा अपने आप में एक आश्चर्य है, और यह आश्चर्य आज के युग का सबसे बड़ा विरोधाभास बन चुका है। हर व्यक्ति और हर राष्ट्र शान्ति की कामना करता है, किन्तु उस शान्ति तक पहुँचने के लिए उचित साधन अपनाने की प्रवृत्ति दुर्लभ है। क्या हिंसा को बढ़ावा देकर शान्ति प्राप्त की जा सकती है? यह प्रश्न आज भी हमारे समाज के सामने खड़ा है। मनुष्य असंभव को संभव बनाने की धुन में कस्तूरी मृग की भाँति अपने ही चारों ओर चक्कर काट रहा है — जबकि शान्ति का सुगंध-स्रोत उसके भीतर ही विद्यमान है।

भगवान महावीर की वाणी में हिंसा के कारणों की जो विस्तृत तालिका मिलती है, वही आज भी अत्यंत प्रासंगिक है। जितने कारण हिंसा के हैं, वे ही अशान्ति के कारण भी हैं। जब कारण का निवारण हो जाता है, तो कार्य अपने आप समाप्त हो जाता है। प्रस्तुत पुस्तक इन कारणों की सूक्ष्म व्याख्या करते हुए शान्ति और अहिंसा के गहरे संबंध को उजागर करती है। यह पुस्तक केवल अध्ययन के लिए नहीं, बल्कि आत्मचिंतन के लिए आमंत्रण है—जो व्यक्ति को अपनी अन्तर्दृष्टि के माध्यम से शान्ति की खोज के वास्तविक मार्ग पर अग्रसर करती है।

वर्तमान राजनीति, अर्थनीति और भौतिक विकास की अंधी दौड़ समाज को हिंसा की दिशा में ले जा रही है। इस दिशा को नियंत्रित करना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। 1988 में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा एवं शान्ति सम्मेलन में यह विचार उभरकर आया था कि विश्व शान्ति के लिए अहिंसा के अनुसंधान, प्रशिक्षण और प्रयोग पर बल दिया जाना चाहिए। आज, तीन दशकों बाद, वह विचार और भी प्रासंगिक प्रतीत होता है— क्योंकि मानवता एक बार फिर नए सिरे से अहिंसा का अध्याय रचने की तैयारी में है।

प्रस्तुत ग्रंथ के संपादन में मुनि दुलहराजजी और मुनि धनंजयकुमारजी ने जिस निष्ठा और सूक्ष्म दृष्टि से कार्य किया है, वह सराहनीय है। अनेक साधकों के समर्पण और चिन्तन का संगम ही इस पुस्तक के रूप में मूर्त हुआ है। यह पुस्तक पाठक के हाथों में पहुँचकर केवल एक ग्रंथ नहीं रह जाती—यह एक जागरण बन जाती है। जागरण इस सत्य का कि बिना अहिंसा के शान्ति संभव नहीं, और बिना शान्ति के मानवता अधूरी है।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :

आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती

+91 87420 04849 / 04949 <https://books.jvbharati.org> books@jvbharati.org

साधु-साध्वियों का आध्यात्मिक मिलन

जयपुर।

जेएलएन मार्ग स्थित बिरला मंदिर पर रविवार को जैन तेरापंथ धर्मसंघ के साधु-साध्वियों का आध्यात्मिक मिलन हुआ। इस अवसर पर जयपुर में प्रवासित मुनि तत्त्वरुचि जी 'तरुण' ठाणा-2 ने ग्वालियर (मध्यप्रदेश) से समागत साध्वी स्वर्णरेखा जी आदि का हार्दिक स्वागत किया।

मौके पर साधु-साध्वियों ने परस्पर क्षमा याचना की एवं कुशल-क्षेम पूछी। इसके बाद साध्वियों ने सामूहिक मंगल गीत का संगान कर संतों के प्रति प्रमोद भावना अभिव्यक्त की। मुनि तत्त्वरुचि जी 'तरुण' ने कहा - संत जन धरती पर शांतिदूत बन शांति का संदेश देते हैं। संत

पुरुषों का आत्मीय मिलन समाज को नई प्रेरणा देता है। मुनिश्री ने स्वागत गीत और शायरी से साध्वियों का भावभीना स्वागत व अभिनंदन भी किया।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजेन्द्र कुमार बाँठिया, बापू नगर से अभय बैद, विनीत कुमावत, तेरापंथ युवक परिषद (पूर्व मंत्री) अभिषेक भंसाली, विनय भंसाली, राहुल छाजेड़, हितेश कोठारी, प्रेम मेहता सहित अनेक श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित थे। आध्यात्मिक मिलन के बाद साध्वियों ने मालवीय नगर स्थित अणुविभा की तरफ तथा संतों ने तिलक नगर अपने प्रवास स्थल की ओर प्रस्थान किया।

मिथ्यात्वी की किसी भी करणी में संवर धर्म नहीं होता : आचार्यश्री महाश्रमण

पड़ासली।

03 दिसंबर, 2025

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशस्ता, अखण्ड परिव्राजक, शान्तिदूत युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण ने आज प्रातः केलवा के भिक्षु विहार से प्रस्थान किया और 'अंधेरी ओरी' पधारे जहां तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य आचार्यश्री भिक्षु ने तेरापंथ के आचार्य के रूप में प्रथम चातुर्मास किया था।

पूज्य प्रवर उस स्थान पर भी विराजमान हुए जहां आचार्यश्री भिक्षु चातुर्मास के दौरान विराजमान होते थे। यहां से लगभग बारह किमी. का विहार कर पड़ासली स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे।

विद्यालय परिसर में आर्हत वांगम्य पर आधारित अमृत देशना प्रदान करते हुए कहा कि हमारी दुनिया में अलग-अलग स्तर, अलग अलग दृष्टिकोण वाले और अलग अलग भूमिकाओं पर जीने वाले आदमी होते हैं। कुछ लोग



मिथ्यात्वी-मिथ्या दृष्टि वाले और कुछ सम्यक्त्व सम्यक् दृष्टि वाले होते हैं। दोनों ही प्रवृत्ति करते हैं, परन्तु दोनों की प्रवृत्ति में अन्तर होता है।

आज मार्गशीर्ष शुक्ला त्रयोदशी है और शुक्ला त्रयोदशी परमपूज्य आचार्यश्री भिक्षु की जन्म तिथि भी है उनकी महाप्रयाण तिथि भी है। वर्तमान में हम आचार्यश्री भिक्षु

जन्म त्रिशताब्दी वर्ष मना रहे हैं। आज हम सुबह केलवा में थे, जो उनसे जुड़ा हुआ क्षेत्र है। आगे बगड़ी, सिरियारी व कंटालिया भी जाना है। आचार्यश्री भिक्षु का एक सिद्धान्त है- मिथ्यात्वी की करणी, मिथ्यात्वी की भी धार्मिक करणी मोक्ष की देश आराधिका होती है। इस संदर्भ में जैनो में कुछ मतभेद भी है। मिथ्यात्वी की करणी और सम्यक्त्व की

करणी में बहुत अंतर होता है। हमारी मान्यता के अनुसार मिथ्यात्वी कोई भी करणी कर ले, उसके संवर धर्म नहीं हो सकता। संवर धर्म होगा तो सम्यक्त्व की ही होगा। यह दोनों की करणी में बहुत बड़ा अंतर है। सारे मिथ्यात्वी भी एक समान नहीं होते, उनमें भी अंतर होता है। मेरे चिंतन से तीन प्रकार के मिथ्यात्वी हो सकते हैं- एक अभव्य मिथ्यात्वी, दूसरा दुर्लभ बोधि मिथ्यात्वी और तीसरा सुलभ बोधि मिथ्यात्वी। अभव्य मिथ्यात्वी कितनी भी तपस्या कर ले, कितना भी ऊपरी आचार पालन कर ले, वह मोक्ष में कभी नहीं जा सकता। अभव्य मिथ्यात्वी की करणी में वह क्षमता नहीं है कि वह मोक्ष में ले जाए। हालांकि अभव्य मिथ्यात्वी पुण्यार्जन करके नव ग्रैवेयिक तक जा सकता है। आचार्य भिक्षु ने कहा कि कोई मिथ्यात्वी है और वो तपस्या, स्वाध्याय आदि करता है और निर्मल चित्त वाला है तो ऐसी करणी करने पर उसे धार्मिक लाभ होगा और निर्जरा का लाभ भी होगा, ऐसी करणी

मोक्ष की देश अपराधिका हो सकती है। यद्यपि सम्यक्त्व और मिथ्यात्वी के लाभ में अन्तर हो सकता है। मिथ्यात्वी की कोई करणी संसार वर्धनी भी हो सकती है।

आचार्यश्री ने कहा कि आज पड़ासली में आना हुआ है। यहां विद्यालय के विद्यार्थियों और लोगों में अच्छा धार्मिक विकास होता रहे। आचार्यश्री के मंगल प्रवचन के उपरान्त साध्वी प्रमुखा विश्रुत विभाजी ने समुपस्थित जनता को संबोधित किया। स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री अनिल बड़ाला व सभी के संरक्षक श्री गुणसागर जी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल ने आचार्यश्री के स्वागत में गीत का संगान किया। आचार्यश्री ने मंगल प्रवचन के पश्चात संबोधि उपवन पधारे। वहां स्वल्प कालिक प्रवास के पश्चात् धानीन स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे। धानीन से जुड़े श्रद्धालुओं ने आचार्य प्रवर का भावभीना स्वागत किया।

उत्कृष्ट मंगल धर्म है : आचार्यश्री महाश्रमण

केलवा।

02 दिसंबर, 2025

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता, अखण्ड परिव्राजक, शान्तिदूत महतपस्वी युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने आज अपनी घवल सेना के साथ राजनगर से केसवा की ओर मंगल प्रस्थान किया। जन-जन पर आशीस बरसाते हुए आचार्य प्रवर लगभग 15 किमी. का विहार संपन्न कर उस केलवा की धरती पर पधारे जहां तेरापंथ के आद्य अनुशास्ता आचार्य श्री भिक्षु ने तेरापंथी आचार्य के रूप में प्रथम चातुर्मास किया था। आचार्य श्री भव्य स्वागत जुलूस के साथ केलवा स्थित भिक्षु विहार में पधारे।

आचार्य श्री महाश्रमण जी ने केलवा के भव्य 'महाश्रमण समसरणों' में उपस्थित विशालजनमेदिनी को पावन संबोध प्रदान करते हुए कहा कि धर्म को उत्कृष्ट मंगल कहा गया है। हमारी दुनिया में स्वयं के लिए भी और दूसरों के लिए भी मंगल कामना की जाती है। मंगल हो इसलिए

प्रयास किया जा सकता है जैसे खाद्य पदार्थ लेने के रूप में, शकुन के रूप में ध्यान देकर, मूर्त के संदर्भ में अनुपालन कर मंगल का प्रयास किया जाता है।

आगम में कहा गया है कि उत्कृष्ट मंगल धर्म है। प्रश्न होता है कि कौनसा धर्म उत्कृष्ट मंगल है? शास्त्रकार ने कहा कि अहिंसा धर्म, संयम धर्म, तप धर्म उत्कृष्ट मंगल धर्म है। अहिंसा और संयम की साधना जो भी करेगा उसका मंगल होगा, तप जो भी तपेगा उसका कल्याण हो सकेगा। अहिंसा धर्म शाश्वत धर्म है, सनातन धर्म है, ध्रुव धर्म है। आदमी यह सोचे कि जैसे मुझे दुःख अप्रिय है, सुख प्रिय है उसी प्रकार अन्यप्राणियों को भी दुःख अप्रिय है, सुख प्रिय है, अतः मैं किसी को व्यर्थ दुःख न पहुंचाऊं। जो व्यवहार स्वयं के लिए प्रतिकूल है, वैसा व्यवहार दूसरों के साथ भी नहीं करना चाहिए। प्राणियों को अपने समान समझना चाहिए किसी भी प्राणी के प्राणों को प्रतिपात नहीं करना चाहिए। अहिंसा धर्म जीवन में है तो शान्ति भी रह



सकती है। जहां हिंसा है वहां अशान्ति का वातावरण बन सकता है।

इसी प्रकार संयम की साधना की बहुत महत्त्वपूर्ण है। वाणी का संयम भी रखना चाहिए। जहां तक संभव हो झूठ नहीं बोलें, कटु वचन न बोलें, अनावश्यक नहीं बोलना, यह वाणी का संयम है। मन से भी किसी का अनिष्ट नहीं सोचें, सुमंगल चिंतन करना मन का संयम है। शरीर का भी संयम करने का प्रयास हो, अपनी पांचो इन्द्रियों का भी संयम रखना चाहिए। दुरुपयोग नहीं करना चाहिए।

तपस्या करना भी साधना है। इसमें अन्न ग्रहण न करना एक तपस्या है। हालांकि शास्त्रों में अध्ययन-अध्यापन, ध्यान आदि भी धर्म के अंग बताए गए हैं। अच्छे कार्य में परिश्रम करना और शुभ योग में रहना भी तपस्या होती है। इसलिए आदमी को अच्छा पुरुषार्थ करने का प्रयास करना चाहिए। आज हम आचार्य श्री भिक्षु से जुड़े हुए क्षेत्र केलवा में आए हैं। यह मानों परम पूज्य आचार्य श्री भिक्षु की दीक्षास्थली है। उन्होंने तेरापंथ की दीक्षा केलवा में ली। अंधेरी ओरी में

आचार्य श्री भिक्षु ने जैन श्वेताम्बर तेरापंथ की दीक्षा लेने पश्चात् पहला चातुर्मासिक प्रवास यहां किया था, तेरापंथ रूपी घट का निर्माण यहां हुआ था। आचार्य श्री भिक्षु का जन्म त्रिशताब्दी का वर्ष भी मना रहे हैं। भिक्षु चेतना वर्ष के दौरान ही पहले राजनगर और उसके बाद केलवा को प्राप्त हुआ। उनकी परंपरा में दस आचार्य प्राप्त हो चुके। केलवा में गुरुदेव तुलसी भी पधारे थे और आज हमारा आना हो गया है।

आचार्य प्रवर के स्वागत में संयोजक श्री महेन्द्र कोठारी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। केलवा के समस्त तेरापंथ समाज ने सामूहिक रूप में गीत का संगान किया। केलवा सर्व समाज द्वारा आचार्य श्री का नागरिक अभिनंदन किया गया और सर्वसमाज ने नागरिक अभिनंदनम् श्री चरणों में अर्पित किया। आचार्य श्री ने मंगल आशीज प्रदान किया। केलवा ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने भावपूर्ण प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला-प्रशिक्षिकाओं ने गीत प्रस्तुत किया।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

सामुदायिकता का प्रयोग, संघ की अखंडता के लिए

संघ में शक्ति होती है। स्वामीजी ने व्यक्ति को स्वतंत्रता के साथ विशेष मूल्य दिया ही और साथ में संघ को भी मूल्य दिया। उन्होंने दोनों का ऐसा संतुलन स्थापित किया, जिससे व्यक्ति का व्यक्तित्व भी सुरक्षित रहा और संघ भी शक्तिशाली बना।

आचार्य भिक्षु ने व्यवस्था दी- प्रतियों और पन्नों की याचना बड़ों (आचार्य) की निश्रा में करें- अपनी निश्रा में न करें। पात्र, लोट आदि की याचना बड़ों की निश्रा में करें, अपनी निश्रा में न करें। वे दें तो लें। गण से निकलने पर किसी साधु-साध्वी को साथ ले जाने का त्याग है। कोई साथ जाता हो तो भी उसे अपने साथ ले जाने का त्याग है अनन्त सिद्धों की साक्षी से। पात्र, लोट आदि सर्व उपकरण अपने साथ ले जाने का त्याग है। कपड़ा नया हो तो वह भी साथ ले जाने का त्याग है।

एक पुराना चोलपट्टा, मुंहपती, एक पुरानी पछेवड़ी, खंडिया और पुराने रजोहरण के उपरान्त वस्तुएं साथ ले जाने का। अनन्त सिद्धों की साक्षी से त्याग है।

गण में रहते हुए पन्ने अथवा लिखावे अथवा कोई दे वह गण में रहे तभी तक के लिए उसके हैं। गण से जुदा हो तो पन्ने टोले के हैं अतः उन्हें साथ ले जाने का त्याग है। नियम की अज्ञानकारी से जो पड़त, पन्ने अपनी निश्रा में लिये हों वे भी बड़ों के हैं, टोले के हैं। उन्हें भी साथ ले जाने का त्याग है। दीक्षा दे वह भी बड़ों (आचार्य) के नाम से दे, अपना-अपना (व्यक्तिगत) शिष्य बनाने का त्याग है।



जानें तेरापंथ को-पहचाने स्वयं को

श्रावक के तीन मनोरथ व अमितव मनोरथ

प्रत्येक प्राणी में कुछ ना कुछ कामना अवश्य रहती है। और जब तक वो पूरी नहीं हो जाती तब तक बड़ा बेचैन रहता है यदि पूरी हो जाती है तो अगली अप्राप्त कामना के लिए दौड़ पड़ता है। किंतु जैनाचार्यों ने कुछ कामनाओं को मनोरथों को श्रेय और उपादेय माना है। आगमों में श्रावकों के लिए तीन मनोरथों की चर्चा की गई है। गणाधिपति तुलसी ने श्रावक संबोध में लिखा है:-

कब आएगा वह धन्य दिवस- जब अपरिग्रही बनूंगा मैं
कब आएगा वह धन्य दिवस, गृह त्याग मुनिव्रत लूंगा मैं
कब आएगा वह धन्य दिवस- अनशन आमरण करूंगा मैं
जीने के मोह मौत भय से बन मुक्त समाधी बरूंगा मैं।

श्रावक गृहस्थ होता है। वह व्रताव्रती होता है, अतः वह यह मान रखे कि वह दिवस कब आए जब वह पदार्थ की मूर्च्छा कम कर पाए, अपरिग्रही बन जाए। वह धन्य दिवस आए जब वह व्रताव्रती से पूर्णव्रती बन जाए अर्थात् मुनि व्रत स्वीकार करूं। और वह परम सौभाग्य का क्षण कब आए जब मेरा जीवन के प्रति मोह और मृत्यु के प्रति भय से मुक्त हो कर समाधी मरण-पंडित मरण को प्राप्त होऊंगा अर्थात् संथारा ग्रहण करूंगा। श्रावक इन मनोरथों का सतत स्मरण रखे



भिक्षु की कहानी जयाचार्य की जुबानी

साधु कौन? असाधु कौन?

एक बार फिर किसी ने पूछा- इन (अमुक अमुक संप्रदायों) में साधु कौन और असाधु कौन?

तब स्वामीजी बोले- किसी ने पूछा, शहर में साहूकार कौन और दिवालिया कौन? एक समझदार आदमी ने उत्तर दिया ऋण लेकर लौटा देता है, वह साहूकार और ऋण नहीं लौटाता तथा मांगने पर झगड़ा करता है, वह दिवालिया।

इसी प्रकार पांच महाव्रतों को स्वीकार कर उनकी सम्यक् पालना करता है साधु और जो उसकी सम्यक् पालना नहीं करता वह असाधु।



क्या आप जानते हैं?



केले का छिलका सचित्त माना जाए।

साप्ताहिक प्रेरणा

जय भिक्षु-जय तुलसी की एक माला फेरे।

शरीर रूपी नौका से संसार रूपी समुद्र को तरने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

दिवेर।

05 दिसंबर, 2025

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, तीर्थंकर के प्रतिनिध, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने आज प्रातः कितेला गांव से मंगल विहार किया। मेवाड़ धरा को पावन बानते हुए पूज्य गुरुदेव अब मारवाड़ की ओर गतिमान हैं। लगभग 8 किमी. का विहार का गुरुदेव मादा की बरसी गांव पधारे। बहिर्विहार से पहुंचे मुनि श्री संजय कुमार जी आदि ढाणा 3 ने लगभग तीन वर्षों पश्चात् पूज्य गुरुदेव के दर्शन किए और दिवेर गांव लगभग 13 किमी. का विहार संपन्न कर पधारे।

तेरापंथ भवन दिवेर में मंगल पादार्पण करते हुए गुरुदेव प्रवास स्थल राज. उच्च माध्यम. विद्या. दिवेर में पधारे। विद्यालय परिसर में आयोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम मे आर्हत वाड.मय के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए आचार्य श्री महाश्रमण जी ने कहा कि शरीर एक नौका है जीव नाविक है यह संसार एक समुद्र है। महर्षि इस संसार



रूपी समुद्र को शरीर रूपी नौ का सेतर जाते हैं। शरीर एक धर्म का साधन है तो शरीर पाप का साधन भी बन सकता है। जितना हो सके हमें शरीर धर्म का साधन बनाएं रखने का प्रयास करना चाहिए।

मन और वचन भी धर्म के साधन बन सकते हैं पर शरीर है तो मन और वचन है। इस दृष्टि से शरीर की मुख्यता है। यह मानव जीवन अभी हमें प्राप्त है और जीवन बीत रहा है। इस शरीर रूपी नौका

का हम जीवन में उपयोग करने का प्रयास करें।

जीवन में समस्याएं भी हो सकती हैं अतः जब तक शरीर की अक्षमता तीन रूपों में आ सकती है, पहला-बुढ़ापा। जब तक बुढ़ापा पीड़ित न करे तब तक धर्म का समाचरण कर लेना चाहिए। दूसरी बात है- व्याधि अर्थात् बीमारी। बीमारी लगने से भी सेवा कार्य आदि करने में समस्या हो सकती है। तीसरी

बात इंद्रिय शक्ति की हीनता न हो, इंद्रियों के कमजोर पड़ जाने पर भी काम करने में कठिनाई हो सकती है। अतः यह हमारा शरीर धर्म साधना में सक्षम हो तब तक काम आ सकता है। जीवन में साधुपन आ जाए और शरीर से साधना की जाए तो यह जीवन का बहुत बड़ा उपयोग है। साधुपन जीवन में आना बहुत बड़े भाग्य की बात है। अंतिम श्वांस तक साधुपन पालना जीवन

की बहुत बड़ी उपलब्धि हो सकती है। अतः इस शरीर के द्वारा जितना हो सके उतनी धर्म की साधना, त्याग, तपस्या आदि करने का प्रयास करना चाहिए। यहां आज बालिकाएं भी आई हैं। बालिकाएं भी सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति को जीवन में उतारने का प्रयास करें। आज हमारा दिवेर गांव में आना हुआ है और यह मेवाड़ क्षेत्र की संभवतः अंतिम रात्रि है। दिवेर की जनता में खूब धार्मिक भावना बनी रहे। श्रावक भी दिवेर अथवा दिवेर से बाहर जहां कहीं भी रहें खूब अच्छा धार्मिक-आध्यात्मिक क्रम जीवन में बनाए रखें। आज तीन वर्षों बाद मुनि श्री संजय कुमार जी स्वामी से मिलना हुआ है। तीनों भाईयों की 'बन्धु त्रिपुटी' और साथ में भतीजे भी हैं। खूब धर्म की प्रभावना करते रहें। दिवेर की जनता में खूब धार्मिक भावना बनी रहे, मंगला भावना। आज मेवाड़ स्तरीय मंगल भावना समारोह आयोजित हुआ जिसमें अनेक श्रद्धालुओं ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। पूज्य गुरुदेव ने मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

आचार्यश्री महाश्रमणजी : चित्रमय झलकियां

